ॐ

श्री सत्नाम साक्षी

गुरु आराधना

(सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज)

महिमा भजन

प्रकाशकः

स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज

प्रेम प्रकाश मण्डल (ट्रस्ट)

श्री अमरापुर स्थान, एम.आई.रोड,जयपुर

फोनः 0141–2372423, 2372424

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशकः

स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज

प्रेम प्रकाश मण्डल (ट्रस्ट)

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर – 302001

सप्तम् संस्करण 1,000

सम्वत् 2067, 2010

भेट : 15/–

मुद्रक :

गणपति, जयपुर

मो. 9828112907 टेलीफैक्स 2207612

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	पेज नं.
1.	सद्गुरु टेऊँराम स्वरूप वर्णन	1
2.	प्रार्थना	2
3.	गुरु प्रार्थनाष्टक	3 - 5
4.	सद्गुरु टेऊँराम चालीसा	6 - 8
5.	सद्गुरु टेऊँराम महिमा भजन	9 - 72
6.	श्री अमरापुर धाम महिमा भजन	73
7.	सोलह शिक्षायें	74 - 75
8.	शान्ति के दोहे	76 - 81
9.	सद्गुरु टेऊँरामाष्टकम्	82 - 83
10.	आरतियां	84 - 87
11.	छन्द व पल्लव	88
12.	पुस्तक सूची पत्र	89 - 90

सं.	भजन	रचयिता	पृ.सं.
1.	सद्गुरु टेऊँराम स्वामी	सद्गुरु सर्वानन्द जी महाराज	9
2.	स्वामी सद्गुरु टेऊँराम आये	सद्गुरु सर्वानन्द जी महाराज	10
3.	सद्गुरु टेऊँराम तेरी	सद्गुरु सर्वानन्द जी महाराज	10
4.	सद्गुरु टेऊँराम के बिन	सद्गुरु सर्वानन्द जी महाराज	11
5.	मेरा सद्गुरु टेऊँराम जगत में	सद्गुरु सर्वानन्द जी महाराज	11
6.	ओ मुंहिंजा सत्गुरु टेऊँराम हुआ	सद्गुरु सर्वानन्द जी महाराज	12
7.	मेरे स्वामी टेऊँराम, थे वो	सद्गुरु सर्वानन्द जी महाराज	12
8.	जन्म लही अजु जोगी आयो	सद्गुरु शान्ति प्रकाश जी महाराज	13
9.	मुंहिंजो सत्गुरु टेऊँराम आ	सद्गुरु शान्ति प्रकाश जी महाराज	13
10.	सत्गुरु टेऊँराम स्वामी	सद्गुरु शान्ति प्रकाश जी महाराज	14
11.	गुरुअ जे जनम जो दिहाड़ो	सद्गुरु शान्ति प्रकाश जी महाराज	14
12.	मेरा टेऊँराम गुरुदेव	सद्गुरु हरिदासराम जी महाराज	15
13.	जय जय जय टेऊँराम स्वामी	सद्गुरु हरिदासराम जी महाराज	16
14.	धरे मनुज अवतार	सद्गुरु हरिदासराम जी महाराज	16
15.	सत्गुरु टेऊँराम स्वामी	सद्गुरु हरिदासराम जी महाराज	17
16.	मुंहिंजा सत्गुर दीन दयाल	स्वामी गुरुमुखदास जी	17
17.	पल पल याद पावे थो मुंखे	स्वामी गुरुमुखदास जी	18
18.	मुंहिंजा सत्गुर टेऊँराम	स्वामी गुरुमुखदास जी	18
19.	मेरे सद्गुरु टेऊँराम	स्वामी भगत प्रकाश जी	19
20.	गुरुदेव मिठा मनठार	स्वामी भगत प्रकाश जी	19
21.	जय जय हे स्वामी टेऊँराम	स्वामी भगत प्रकाश जी	20
22.	आहियां तुंहिंजे दर जो गुलाम	स्वामी भगत प्रकाश जी	20
23.	दिल में हो तस्वीर तेरी	स्वामी भगत प्रकाश जी	21
24.	स्वामी टेऊँराम महाराज	स्वामी भगत प्रकाश जी	21
25.	अचो प्रेमी हली	स्वामी भगत प्रकाश जी	22–23
26.	सन्त सियाणो तूं हुएं	स्वामी माधव दास जी	24
27.	अजु खां वठीं ऐ कण्डी	स्वामी माधव दास जी	25
28.	मां शेवक तुंहिंजो आहियां	स्वामी चन्दन राम जी	25
29.	आखाड़ जो महीनो	स्वामी जीवनमुक्त जी	26
30.	ड़ींहु छन्छर आयो आ	स्वामी जीवनमुक्त जी	27
31.	सद्गुरु टेऊँराम स्वामी	स्वामी गणेशानन्द जी	27
32.	हिन्द ऐं सिन्ध में नालो	स्वामी गंगाराम जी	28
33.	सचु पचु हुयड़ो सत्गुरु	स्वामी प्रेमानन्द जी	28
34.	टेऊँराम बाबा अञां भी	स्वामी ऊधवदास जी	29
35.	सत्गुरु मुंहिंजो कामिल आहे	स्वामी जयप्रकाश जी	29
36.	सत्गुरु टेऊँराम जगत जे	स्वामी धर्मप्रकाश जी	30
37.	सद्गुरु टेऊँराम स्वामी	स्वामी बसन्तराम जी	30
38.	स्वामी टेऊँराम अवतार हुयो	स्वामी बसन्तराम जी	31
39.	स्वामी टेऊँराम जगत में	स्वामी स्वयं प्रकाश जी	31
40.	स्वामी टेऊँराम गुणरास हो	स्वामी भजनदास जी	32
41.	सत्गुरु स्वामी टेऊँराम प्यारो	स्वामी भजनदास जी	32
42.	वरी घर घर में वाधाई	स्वामी भजनदास जी	33
43.	कामिल कामिल हो कामिल	स्वामी हंसप्रकाश जी	33
44.	मेरे सद्गुरु टेऊँराम	संत गोविन्द राम जी	34
45.	स्वामी टेऊँराम हुआ अवतारी जी	संत गोविन्द राम जी	34–35
46.	मेरे स्वामी टेऊँराम कभी	संत गोविन्द राम जी	35
47.	जन्म मनायो मिली मौज मचायो	संत ब्रह्मानन्द जी	36
48.	मुंहिंजा सत्गुरु साईं टेऊँराम	संत ब्रह्मानन्द जी	36
49.	सद्गुरु टेऊँराम जी अब तो आइये	संत ब्रह्मानन्द जी	37
50.	सूंहें मुंहिंजो सांई टेऊँराम	संत ब्रह्मानन्द जी	37

सं.	भजन	रचयिता	पृ.सं.
51.	सत्गुर मिठे तुंहिंजे नाम ता	संत मनोहरलाल जी	38
52.	मूंखे तार अची	संत मनोहरलाल जी	39
53.	मुंहिंजा सत्गुर टेऊँराम	संत जयदेव जी	39
54.	कलियुग में भव तारण आये	संत जयदेव जी	40
55.	ओ सुणो सादगी स्वामी टेऊँराम जी	कवि पहिलाजराम जी	40
56.	खण्डूअ में देहि धराई	कवि पहिलाजराम जी	41—42
57.	स्वामी टेऊँराम तुंहिंजो झण्डो झूले	कवि पहिलाजराम जी	42
58.	मिठो नालो स्वामी टेऊँराम जो	कवि पहिलाजराम जी	43
59.	ओ जोगी स्वामी टेऊँराम हो	कवि पहिलाजराम जी	43
60.	स्वामी टेऊँराम मिठा	कवि पहिलाजराम जी	44
61.	अमर देश खां देहि धरे आयो	कवि पहिलाजराम जी	44
62.	वारियूं वसायूं तो सजण	कवि पहिलाजराम जी	45
63.	सत्गुरु टेऊँराम महाराज, कयो	कवि पहिलाजराम जी	45
64.	स्वामी टेऊँराम आ जीअरो रे	कवि पहिलाजराम जी	46
65.	जागियो कृष्णा जो पूरब करम	कवि पहिलाजराम जी	46
66.	आशिक अहिड़ो न थीन्दों	कवि पहिलाजराम जी	47
67.	आए थे स्वामी टेऊँराम	कवि पहिलाजराम जी	47—48
68.	तिखी तूं न बुधमि	कवि पहिलाजराम जी	48
69.	शल वधन्दी रहे	कवि पहिलाजराम जी	49
70.	जे चईं जोगी बणां बणु	कवि पहिलाजराम जी	49
71.	थोड़ा सा इतिहास सुनो	कवि पहिलाजराम जी	50—51
72.	अमर कलम से लिखी जाएगी	कवि पहिलाजराम जी	51—52
73.	तोखे स्वामी टेऊँराम चवां	कवि परमानन्द जी	52
74.	घर घर में तस्वीर दिसां थो	कवि परमानन्द जी	53
75.	शहर खण्डूअ में पैदा थियड़ो	कवि परमानन्द जी	53
76.	स्वामी टेऊँराम सुधीर	कवि परमानन्द जी	54
77.	स्वामी टेऊँराम की अमर कहानी	कवि परमानन्द जी	54
78.	गायो सभु गीत खुशियुनि जा	कवि परमानन्द जी	55
79.	छन्छर दिहाड़ो आयो	कवि परमानन्द जी	55
80.	स्वामी टेऊँराम जी कमाई	कवि परमानन्द जी	56
81.	कहिड़ी मां महिमा गायां	कवि परमानन्द जी	57
82.	स्वामी टेऊँराम जग में	कवि परमानन्द जी	57
83.	स्वामी टेऊँराम हो जोगी जती	कवि परमानन्द जी	58
84.	स्वामी टेऊँराम करे व्यो भक्ती	कवि परमानन्द जी	58
85.	जोगु जुगिती मिले	कवि परमानन्द जी	59
86.	दु:ख दूर कजांइ	कवि परमानन्द जी	59

सं.	भजन	रचयिता	पृ.सं.
87.	थी जोगी जोग कमायां	पण्डित सीतल दास जी	60
88.	कींअ विहन्दो हुएं, कींअ सुहन्दो हुएं	पण्डित सीतल दास जी	60
89.	हुयो स्वामी टेऊँराम, जहिं जपियो	कवि शास्त्री जी	61
90.	सिन्ध देश में इक था योगी	कवि चन्दू जी	61
91.	तुंहिंजी कृपा जी घुरिजे कणी	कवि हेमन जी	62
92.	स्वामी टेऊँराम सुजानी	कवि लालानारायण जी	62
93.	स्वामी टेऊँराम जी प्यारा	कवि लालानारायण जी	63
94.	वारी ओ वारी	कवि नानक राम जी	63
95.	जेसीं गंगा ऐं जमुना में पाणी रहे	कवि नोतनदास जी	64
96.	अमरु गीत बुधायां थो मां	कवि नारायण जी	64
97.	करि महिर अची सभते	भगत चुन्नी लाल जी	65
98.	करि पार तूं बेड़ों मुंहिंजो	भगत किशन जी	65
99.	मूं वतो आधार आहे	कवि श्याम लाल	66
100.	मुंहिंजो सत्गुरु तूं	कवि वीरभान जी	66
101.	सत्नाम साखी जपे	श्री शंकरलाल जी	67
102.	किसे राम प्यारा	श्री महादेव जी	68
103.	धनु धनु मुंहिंजा सांईं टेऊँराम	सन्त हरिओम लाल जी	69
104.	स्वामी टेऊँराम ज्ञानी	कवि वासदेव जी	70
105.	सद्गुरु टेऊँराम तेरी अजब	सन्त राजूराम जी	70
106.	स्वामी टेऊँराम तेरी महिमा अपरम्पार	सन्त नरेशलाल जी	71
107.	मेरे सद्गुरु टेऊँराम साहब		71
108.	स्वामी टेऊँराम दातार	सन्त शम्भूलाल जी	72

ॐ

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम स्वरूप वर्णन

'टे' त्रिगुण स्वरूपाय,
'ऊँ' निर्गुण निरूपणे।
'टेऊँ' ब्रह्माभिधानाय,
नमस्तस्मै नमो नमः॥

अर्थ

'टे' तीन गुणों के जो स्वरूप हैं, 'ऊँ' जो तीन गुणों से परे निर्गुण निराकार हैँ ऐसे ब्रह्मस्वरूप सत्गुरु टेऊँरामजी महाराज को हमारा प्रणाम है, प्रणाम है, प्रणाम है।

ॐ सत्नाम साक्षी

प्रार्थना

हे परम पिता समर्थ बाबा ! सच्चिदानंदघन !
ब्रह्माण्ड नायक ! सदा सुखदायक ! अविनाशी !
घट घट वासी ! स्वयं प्रकाशी ! सब सुख राशी!
सच्ची सुमति देना । स्वांग की लज्जा रखना ।
नगर बन में रक्षा कीजे । अभयदान प्रभु सबको दीजे।।
देश - परदेश दासों-बच्चों की रक्षा करना ।
धर्म की लज्जा रखना । अपनी चलती चलाना ।
अन्तकाल सुहेली करना । तन-मन-धन वाणी
करके मेरे द्वारा किसी की दिल दुःखी न होवे।
सिर धर आयुस करूँ तुम्हारा। परम धर्म ये नाथ हमारा।।
सुत अपराध करत हैं जेते । जननी चीत न राखत तेते।।
जैसे बालक भाव स्वभावे, लख अपराध कमावे ।
कर उपदेश झिणके बहु भान्ती, बहुरि पिता गल लावे।।
सतगुरु तुम पूरण करो, मेरी यह अर्दास ।
कहे टेऊँ मन में कभी, रहे न जग की आस ।।
आशवन्दी गुरु तो दर आई, तुम बिन ठौर न काई।
तूं हरि दाता तूं हरि माता, मेरी आश पुजाईं ।।
पाइ पलउ मैं पेरे प्यादी, आयसि हेत मंझाईं ।
तन मन धन अर्दास करे मैं, मांगत नाम सनेही ।।
नाम तुम्हारा साबुन करसां, धोसां पाप सभेईं ।
कहे टेऊँ गुरु लोक तीन में, आवागमन मिटाईं ।।
ॐ शान्ति ! ॐ शान्ति !! ॐ शान्ति !!!

गुरु प्रार्थनाष्टक

1. परम पावन गुरु, तेरी हूं दावन गुरु
आवन जावन गुरु, मेरा ही मिटाइये।
हम हैं अजान गुरु, आप हो सुजान गुरु,
आतम का ज्ञान गुरु, मुझको सुनाइये॥
तरन तारन गुरु, करन कारन गुरु,
विघ्न टारन गुरु, बिगड़ी बनाइये।
कहे टेऊँ सतिगुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये॥

2. परम दयाल गुरु, परम कृपाल गुरु,
परम उजाल गुरु, ज्योति को जगाइये।
सुन्दर सुचाल गुरु, नित ही निहाल गुरु,
अमर अकाल गुरु, यम से बचाइये॥
गोविन्द गोपाल गुरु, प्रभु प्रतिपाल गुरु,
राम रखपाल गुरु, बन्धन छुड़ाइये।
कहे टेऊँ सतिगुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये॥

3. परम उदारी गुरु, परम भण्डारी गुरु,
परम आधारी गुरु, नाम को जपाइये।
पर दुःखी हारी गुरु, पर सुखकारी गुरु,
पर उपकारी गुरु, हरि से मिलाइये॥
नित अवतारी गुरु, शुभ गुणकारी गुरु,
कर रखवारी गुरु, ताप को जलाइये।
कहे टेऊँ सतिगुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये॥

4. शाहन के शाह गुरु, सच्चा पातिशाह गुरु,
बिन परवाह गुरु, विपत्ति हटाइये।
बेवाहन वाह गुरु, बेराहन राह गुरु,
गुणन अथाह गुरु, मारग बताइये॥
दया के दर्याह गुरु, दोषन के दाह गुरु,
बख्श गुनाह गुरु, मोहि न भुलाइये।
कहे टेऊँ सतिगुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये॥

5. राजन के राज गुरु, सन्त सिरताज गुरु,
महा महाराज गुरु, मोहि अपनाइये।
गरीब निवाज गुरु, राखो मेरी लाज गुरु,
पूरे कर काज गुरु, अज्ञान उड़ाइये॥
भव-जल पाज गुरु, सुखन समाज गुरु,
तारक जहाज गुरु, भव से तराइये।
कहे टेऊँ सतिगुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये॥

6. ब्रह्म के स्वरूप गुरु, आत्म अनूप गुरु,
अमल अरूप गुरु, द्वन्द्व को गलाइये।
अगम अगाध गुरु, अमर अबाध गुरु,
अचल अनाद गुरु, अभेद बनाइये॥
देवन के देव गुरु, अलख अभेव गुरु,
अटल अखेव गुरु, स्वरूप लखाइये।
कहे टेऊँ सतिगुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये॥

7. पूरन सुज्ञानी गुरु, पूरन सुध्यानी गुरु,
पूरन सुदानी गुरु, प्रेम को पिलाइये।
शरण पालन गुरु, संकट घालक गुरु,
मेरे हो मालिक गुरु, दरस दिखाइये॥
करुणा निधान गुरु, सद् महरबान गुरु,
करले कल्यान गुरु, सुमति सिखाइये।
कहे टेऊँ सतिगुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये॥

8. निओटन ओट गुरु, काटो भ्रम कोट गुरु,
मेटो यम चोट गुरु, पापन पलाइये।
वीरन के वीर गुरु, धीरन के धीर गुरु,
पीरन के पीर गुरु, शान्ति में समाइये॥
तुम धन धन गुरु, मैं हूं तेरा जन गुरु,
मारे मेरा मन गुरु, दोषन दलाइये।
कहे टेऊँ सतिगुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये॥

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

सद्गुरु टेऊँराम चालीसा

प्रथमे हरिहर ब्रह्म को, बार बार प्रणाम।
नर तन धर त्रिदेव जो, होया टेऊँराम ॥

तप्त धरा मरुदेश में, मेघ देत सन्देश।
त्यों जग के कल्याण हित, हरि धारै नर भेष॥

सिन्ध देश की महिमा भारी, बार बार ऋग्वेद उच्चारी
सिन्धु तीर पावन प्रसंगा, बहती जहां ज्ञान की गंगा
ऋषी मुनी अरु ज्ञानी ध्यानी, पढ़ते जहां ब्रह्म की बानी
धन्य सिन्ध की धरती सारी, धन्य सिन्ध के नर अरु नारी
समय बड़ा प्रबल प्रवीना, वेद पुराणनि वर्णन कीना
काल चक्र दुस्तर अति भारा, आ अधर्म ने पांव पसारा
धर्म कर्म भूले नर नारी, पाप कर्म में वृत्ती धारी
गीता में श्री कृष्ण सुनाया, जब जब भार भूमि पर आया
तब तब ही अवतार धरूं मैं, सत्य धर्म की विजय करूं मैं
प्रण पालन हित ले अवतारा, आए खण्डू नगर मंझारा
चेलाराम के आंगन माहीं, खुशी भई सब के मन माहीं
कृष्णा मां को दरश दिखाया, चतुर्भुजी निज रूप पसाया
शुक्ला तिथि षष्ठम आसाढ़े, प्रकट भए सब काज संवारे
शनिवार का दिवस सुहाना, शशिसम चमकत रूप जहाना
लोली दे दे मात लुडावे, गद् गद् गीत कण्ठ से गावे
बालक वय से हरिगुन माहीं, प्रीत लगी प्रभु सुमरन माहीं
विद्या हेतु जब उन्हें पठाया, सतगुरु आसूराम तहं पाया
गुरु बोले हो स्वयं सिद्ध तुम, परिपूर्ण हो ब्रह्म शुद्ध तुम
बैठ एकान्त में ध्यान लगाया, सहज समाधि के सुख को पाया

खान पान जग विषयों माहीं, रंचक मन कहं लागत नाहीं
लगन लगी गुरु शब्द मंझारी, टूटी मोह कोह की जारी
बालक गण को साथ बिठाये, राम नाम की धुनी लगाए
इक दिन सिन्धू नदी किनारे, बालक गए नहाने सारे
वस्त्र उतार तट पर रख दीन्हें, टेऊँराम के सुपुर्द कीन्हें
बालक जल में खेलन लागे, खिल्लू था उन सब में आगे
खेलत खेलत खिल्लू डूबा, सबने देखा बड़ा अजूबा
वस्त्र सहित गुरु जल के माहीं, कूदे लुप्त भए फिर ताहीं
बालक भय से रोअन लागे, समाचार देवन कुछ भागे
शोकाकुल आये नर नारी, चमत्कार देखा इक भारी
खिल्लू अपनी गोद उठाये, सतगुरु जी तब बाहर आये
अद्‌भुत ऐसा देख निजारा, विस्मित भया नगर तब सारा
खिल्लू कहा सुनो हे भाई, डूब गया जब मैं जल माहीं
सुन्दर देव वहां दो आए, पकड़ा मुझे,वरुण ढिग लाए
इतने में टेऊँराम पधारे, तांको देख प्रसन्न भए सारे
अभिवादन वरुण तब कीन्हा, निज सम्मुख ही आसन दीन्हा
कहन लगे कुछ सेवा बताएं, बोले खिल्लू लेन हम आए
प्रसन्न हो तब दीन्ह विदाई, सद्‌गुरु ने मम जान बचाई
धन्य धन्य गुरु टेऊँरामा, परम पवित्र तुम्हरा नामा
जय हो हे गुरुदेव तुम्हारी, सुख सागर तुम अति हितकारी
स्वर्ण आग संग मल ज्यों त्यागहिं, लेवत नाम पाप त्यों भागहिं
तप्त बुझावत हैं चन्द ज्यों, शीत हृदय करत नाम त्यों
इच्छित वस्तु कल्पतरु देवे, नाम सुमरते सब फल सेवे
अब तो सत्संग की धुनि लागी, मन की माया ममता त्यागी
डंडा झांझ लिया यकतारा, बाजा तबला साज प्यारा
गली गली में धूम मचाई, कृष्ण जैसे रास रचाई
प्रेम बढ़ा जब खण्डू माहीं, गुरु सोचा यहाँ रहना नाहीं
नाम कीर्ती जय जयकारा, इन बातों से सन्त न्यारा

यह विचार कर बिना बताए, जंगल में कुछ दिवस बिताए
आसन वहां जमाया स्थिर, हिंसक जन्तू का था ना डर
खोज खोज प्रेमी वहाँ आए, लौट चलें सबने समझाए
थिर आसन निश्चल मन ठाना, कहा अभी फिर लौट न जाना
घास फूस तृण कुटी बनाई, कन्द मूल खा जान सुखाई
गुरुमन्त्र का कर अभ्यासा, मेट दई जम की सब त्रासा
आतम अन्तर वृती लागी, जगत वासना सकली भागी
पावन भूमी वह जग माहीं, हरिजन करत तपस्या जाहीं
तिस भूमी की रज सिर लावत, गिरिजा को कह शंभु सुनावत
तीर्थ सम वह पूजन जोगी, जहं जहं नाम जपत है योगी
धन्य धन्य है सो अस्थाना, अमरापुर है उसका नामा
अमरापुर स्थान अमर है, दर्श करे सो फेर न मर है
चार धाम सम पवित्र धामा, अमरापुर है उसका नामा
तांकी महिमा कही न जाई, शेष शारदा पार न पाई
बैठ जहां गुरु ज्ञान सुनाया, सत्‌नाम साक्षी मंत्र जपाया
प्रेम प्रकाशी पंथ बनाया, सोए जीवों को था जगाया
जब तक गंग यमुन का पानी, तब तक अमर रहेगी कहानी
सूर्य चन्द्र प्रकाश हैं जौं लौं, नाम प्रकट जग में तव तौं लौं

अमर देश से आगमन, अमर देश प्रस्थान ।
अमरापुर वाणी अमर, अमरापुर स्थान ॥

आप अमर चरित्र अमर, अमर आपका नाम।
तव शरनागत भी अमर, धन गुरु टेऊँराम॥

साधु सन्त सब पूज्य हैं, सबको है प्रणाम ।
स्वासों में पर रम रहे, सत्‌गुरु टेऊँराम ॥

चालीसा गुरुदेव की, पढ़े सुने जन जोय।
श्रद्धा मन में जो धरे, मुक्ती पावे सोय॥

भजन-1

तर्जः सुनो सुनो ऐ दुनिया वालो ....

टेकः सतगुरु टेऊँराम स्वामी, आए धर अवतारा।
जिनके गुण मैं गाय सकूं ना, महिमा अपरम्पारा॥

1. सिन्धु देश में खण्डू नगर इक, महा अती अभिरामा।
बाग़ बग़ीचे सुन्दर गैयां, गोकुल के सम धामा॥
घर-घर में सत्संग कर प्रेमी, जपहिं राम का नामा।
तीन तरफ से नहरें बहतीं, चतुर्थ सिन्धू धारा॥

2. बालपने से हरी भजन में, मस्त हुआ अनुरागी।
जगतर की सब इच्छा त्यागे, होया महा वैरागी॥
अपने घर को छोड़के चलिया, शुक ज्यों भया त्यागी।
सच का कर उपदेश सर्व को, संसा भ्रम संहारा॥

3. टण्डे आदम दक्षिण तरफ में, जंगल था इक भारी।
वहां रेत पर बान्ध के आसन, बैठा धीरजधारी॥
कथा यथार्थ निशदिन करते, सुनते सब नर-नारी।
सन्त मुसाफिर सबके लीये, खोला अखण्ड भण्डारा॥

4. ब्रह्म ज्ञान की बीन बजाकर, सबको निर्भय कीना।
दया करे निज दासनि ऊपर, दान अभय का दीना॥
पूर्ण आत्म पद पहुंचाए, जन्म मरण दुःख छीना।
धर्मराज का डर नहिं वांको, लेखा यम निवारा॥

5. दीन दयालू दीन त्राता, जीव उबारण आया।
करम धरम से भूले थे तिस, सत्मार्ग में लाया॥
अद्भुत अपनी लीला कर फिर, निज स्वरूप समाया।
सर्वानन्द मैं सद्वारी, जाऊँ बलि बलिहारा॥

भजन-2

टेकः स्वामी सत्गुरु टेऊँराम आये, जिन सोये जीव जगाये।

1. सत्संग सुन्दर रास रचाए, प्रेम किया प्रचारा।
सर्व जीवों के मन को मोहिया, बंसी बिरह बजाये॥

2. अपना स्वार्थ सर्व त्यागे, कीना पर उपकारा।
पाप कर्म में भूल पड़े तिस, शुभ कर्मों मग लाये॥

3. तन मन धन पुनि वाणी करके, किसकी दिल न दुखाई।
सब में साक्षी चेतन देखा, औरों को दिखलाये॥

4. अमरापुर स्थान बनाया, रेत ऊपर अभिरामा।
अमरापुर की अमर सो वाणी, गए गम्भीर सुनाये॥

5. प्रेम प्रकाशी पन्थ चलाया **सर्वानन्द** सुखकारी।
जिसकी जग में प्रकट करके, कीर्ति कविजन गाये॥

भजन-3

टेकः सत्गुरु टेऊँराम तेरी, मैंने देखी महान शक्ति।

1. विश्व व्यापक होय रहा तुम, यूनि चराचर माहीं।
साक्षी चेतन अमर ज्योती, तुम्हरी है हर जाइ जगती॥

2. परम उदारी हो निष्कामी, सच का जा प्रचार करा।
सबकी प्रीती हरि से लाई, जां से मन की दुर्मति दगती॥

3. मजहब वाले भेदवादियों, तुमको बहुत सताया।
लोक निन्दा दुःख सहारा, अटल होई आपकी भक्ति॥

4. **सर्वानन्द** सर्व सुखदाता, सोया जीव जगाया।
कमल जैसे रहा न्यारा, हरि की माया ना तुझ लगती॥

भजन-4

टेक: सत्गुरु टेऊँराम के बिन, और न कोई मुझे अधारा।

1. जैसे कागा बैठ जहाज पर, जावत सागर माहीं।
चारो तरफ से पानी-पानी, सूझत ना को तिसे किनारा॥

2. जैसे मीना रहत नदी में, बाहर ना कब जाती।
जल बिना वह जीवत नाहीं, एक ही सरिता तिसे सहारा॥

3. बालक को बल मात-पिता का, होत भरोसा भारी।
निर्भय होकर खावत खेलत, हरदम हंसता बारम्बारा॥

4. **सर्वानन्द** न को हितकारी, सत्गुरु सम संसार में।
कठिन समय में जल्दी आकर, कष्ट विघ्न दुःख मेटत भारा॥

भजन-5

तर्ज: अब सौंप दिया इस जीवन ....

टेक: मेरा सत्गुरु टेऊँराम जगत में, जीव उबारण आया था।
वो तो भव सिन्धु तारण आया था॥

1. मान न चाहत रहत निर्मानी, महा वैरागी सदा सैलानी।
नाम हरी का ले इकतारा, गली-गली में गाया था॥

2. डूबत था जे भव सिन्धु माहीं, कोई सहारा सूझत नाहीं।
ब्रह्मज्ञान की नाव बना तिस, तुरत किनारे लाया था॥

3. अविद्या नींद में जे जन सोया, जनम मरण दुःख सह बहु रोया।
मधुर वचन कह ऊँचे स्वर से, जल्दी तिसे जगाया था॥

4. जिनका जीवन पशू समाना, खाना पीना फिरत अजाना।
शुभ कर्मों की युक्ति सिखा तिस, राम का नाम जपाया था॥

5. **सर्वानन्द** जे जन प्यासी, प्रेमी श्रद्धालू जिज्ञासी।
तन मन धन से सेव करे, पुनि इंच्छित फल को पाया था॥

भजन-6

तर्ज: जिन लाइ मुहिंजो जियड़ो जले ....

थलु: ओ मुहिंजा सत्गुरु टेऊँराम हुया ।
दे̱ई विरह विछोड़ो घनश्याम विया ॥

1. जे दिल वारा दातार हुया, ऐं ज्ञान विज्ञान भण्डार हुया।
हिन कलयुग में अवतार हुया, जे साखी जपाए सत्नाम विया॥

2. जे मड़द बहादुर शेर हुया, ऐं अचल अदो̱ल सुमेर हुया।
निर्मानी से निर्वैर हुया, करे कर्म सदा निष्काम विया॥

3. जे सर्व गुणन जी रासी हुया, ऐं पूरन प्रेम प्रकाशी हुया।
नित अमरापुर जा वासी हुया, पुर पियारे प्रेम जो जाम विया॥

4. जे **सर्वानन्द** सुखकारी हुया, ऐं जत सत धीरज धारी हुया।
ऐं परम विवेक विचारी हुया, सभ पाड़े पंहिंजा अंजाम विया॥

भजन-7

तर्ज: बहे अखियों से धार ....

टेक: मेरे स्वामी टेऊँराम, थे वो सदा निष्काम।
पिलाया प्रेम का जाम-सबको मिलाया भगवान से॥

1. गांव खण्डू में जन्म ले आये-सब भक्तों के कष्ट मिटाये।
जैसे अयोध्या में राम, हुए गोकुल में घनश्याम॥

2. गुरु आसूराम को बनाया, अपने तन को था बहुत तपाया।
सदा मुख में था राम, नहीं जग से कुछ काम॥

3. अखण्ड भोजन भण्डारा चलाया, जो भी आया था खूब खिलाया।
आया जो भी सुनकर नाम, पाया आतम विश्राम॥

4. प्रभू मिलने की राह दिखाई, अन्दर अनुभव की ज्योति जगाई।
सर्वानन्द सुखधाम - जपाया साक्षी सत्नाम॥

भजन-8

तर्जः अंञा त ऐट मां आहियां नढ़िड़ी ....

थलुः जनम लही अॼु जोॻी आयो।
टेऊँराम आ नालो जहिंजो, सभजे मन खे भायो॥

1. चेलाराम खे ॾियनि वाधायूं, ॿार ॿुढा नर नारियूं।
शहर खण्डूअ जे गलीअ-गलीअ में, ॾाढो आनन्द छायो॥
2. जनम लहण सां थी रोशनाई, अविद्या ऊंदहि वयड़ी।
सूरज वांगुरु उभिरी जॻ में, कुल अंधकारु मिटायो॥
3. ग्वाल ॿाल जे कृष्ण जा हुआ, तिनिमां हिकड़ो हीउ भी।
मोहन वांगुरु मुरली वॼाए, सब खे मस्त बणायो॥
4. जॻ जे तारण खातिर जोॻी, हुकुम हरीअ सां आयो।
राम नाम जे ॿेड़े चाढ़े, सारो साथु तरायो॥
5. **शान्ति प्रकाश** चवे हथ जोड़े, ईहो अर्जु अघायो।
सत्गुरु पंहिंजे चरननि में नितु, मन जो प्रेमु वधायो॥

भजन-9

तर्जः मुहिंजी ॿेड़ी अथई विच सीर ते ....

थलुः मुंहिंजो सत्गुरु टेऊँराम आ, मुंहिंजो तंहिंखे नित प्रणाम आ॥

1. जॾहिं-जॾहिं थे प्रेमिनि पुकारयो, तॾहिं-तॾहिं अवतार थे धारियो।
जंहिंजो अमरापुर निज धाम आ॥
2. सत्नाम साक्षी मन्तरु ॾेई, सत्गुर तारिया पापी केई।
जंहिंजो दीन दयालू नाम आ॥
3. प्रेम प्रकाशी पन्थ हलायो, उन रस्ते हरि सांणु मिलायो।
जंहिंजो हरि सां मेलणु काम आ॥
4. **शान्ति प्रकाश** गुरु पूरनु आहे, तंहिंजे मटु ॿियो को भी नाहे।
जंहिंजो आतम में विश्राम आ॥

भजन-10

तर्जः मुंहिंजो मनठार मेहर ....

थलुः सत्गुरु टेऊँराम स्वामी, संतनि सींगार हो।

1. तारनि में जींअ चन्दर, सिद्धन में गोरख सुन्दर।
गोपनि में जींअ गिरधर, तींअं मनठार हो॥
2. कामिल हो कणिया वारो, मर्द हो मणिया वारो।
गोहर हो गुणिया वारो, अनुभव भण्डार हो॥
3. झण्डो जंहिं धर्म झुलायो, पाखण्ड जो पेर पटायो।
राम संदो राह ॿुधायो, कन्दो प्रचार हो ॥
4. **शान्ति प्रकाश** प्यारो, सत्गरु हो सोभ वारो।
हणीं वियो नींह नगारो, दिल जो दातार हो॥

भजन-11

तर्जः गुरू महाराज ग़रीबनि जो ....

थलुः गुरुअ जे जनम जो ॾिहाड़ो, मनायूं था मनायूं था।
मिली सभु गीत सत्गुर जा, ॻायूं था ॻायूं था॥

1. खंडूअ जे शहर में थियड़ो, जनम पावन गुरुअ जो अॼु।
करे पूॼा तंहींजी अॼु, निमी सिरड़ो निवायूं था॥
2. कयलि उपकार सत्गुर जा, करे कुल याद दिल अंदर।
रखी श्रद्धा गुरुनि जो जसु, सभिनि खे अॼु सुणायूं था॥
3. गुलनि ऐं फुलनि जी वर्खा, करिनि अॼु देव भी गुर ते।
वॾीअ दिल सां असां भी अॼु, बिगिल बाजा वॼायूं था॥
4. भला थी भाॻ अॼु तिनिजा, थियनि शामिल जे उत्सव में।
वधाइनि शानु सत्गुर जो, भलो तिनिजो मनायूं था॥
5. अर्श ऐं फर्श में आनंद, **शांति प्रकाश** थी वियड़ो।
गुरुअ जे जशन में गॾिजी, असां भी जै बोलायूं था॥

भजन-12

तर्ज: चली कौन से देश ....

टेक: मेरा टेऊँराम गुरुदेव, मनुज बन आया था।

1. कर्म योग को खूब कमाया, मन को मारा तन को तपाया।
   जोश जलाया था ॥

2. दीपक जैसे जान जलाई, जान जलाकर ज्योति जगाई।
   पथ दिखलाया था ॥

3. जहां रेत के ढेर थे भारी, पशु पंछी की थी वो झारी।
   डेरा लगाया था ॥

4. भड़क उठी जब द्वेष की ज्वाला, चारों तरफ से घेरा डाला।
   ना घबराया था ॥

5. जब तेरी झोंपड़ी जलने लागी, फिर भी न क्रोध की ज्वाला जागी।
   द्वन्द्व गलाया था ॥

6. गीता का सन्देश सुनाया, खाली सुनाया न, करके बताया।
   चलके दिखाया था ॥

7. न्याय नीति और धर्म कर्म का, सत्य शान्ति और मर्म शर्म का।
   पाठ पढ़ाया था ॥

8. **हरिदास** कह हरि से जोड़ा, झूठ कपट पाखण्ड को तोड़ा।
   सत्य बताया था ॥

भजन-13

तर्ज: प्रार्थना

टेक: जय जय जय टेऊँराम स्वामी, कृपा करो प्रभु अन्तर्यामी।

1. बुरे भले गर हैं तो तुम्हारे, जीते हैं हम तेरे सहारे।
   हम हैं तुम्हारे तुम हो हमारे, बार बार लख बार नमामी ॥
2. चेलाराम के तुम हो नन्दन, मां कृष्णा के नित सुख वर्धन।
   भव भय भंजन जन मन रंजन, बार बार लख बार नमामी ॥
3. खण्डू नगर के नटवर नागर, अमरापुर के नित सुख सागर।
   प्रेम प्रकाशी पंथ दिवाकर, बार बार लख बार नमामी ॥
4. तुम ही सत् हो तुम ही चित हो, तुम ही आनन्द एक अनन्त हो।
   तुम ही गति हो तुम ही मति हो, बार बार लख बार नमामी ॥
5. तुम ही सद्गुरु तुम पितु माता, तुमही **हरि** हर तुम ही विधाता।
   हम हैं भिखारी तुम हो दाता, बार बार लख बार नमामी ॥

भजन-14

तर्ज: बहे अखियों से धार ....

टेक: धरे मनुज अवतार, आए कली में करतार।
बोलो जय जयकार, सत्गुरु टेऊँराम की ॥

1. अपने जीवन को तपस्वी बनाया, सत्य मार्ग में सबको लगाया।
   करी ज्ञान गजकार, भागे संशय सियार ॥
2. वचन मीठे सर्व को सुनाया, छल झूठ कपट को हटाया।
   शील संयम को धार, मारा क्रोध अहंकार ॥
3. नित प्रेम का पाठ पढ़ाया, सभ जीवों का द्वेष उड़ाया।
   देके विवेक विचार, मेटा मन का विकार ॥
4. धारी हृदय सहारन शक्ती, करी पूरन हरी की भक्ती।
   हरिदास हरवार, जाऊँ बलि-बलिहार ॥

भजन-15

तर्ज: जोगी जिअ में जादू हणी विया ....

थलु: सत्गुरु टेऊँराम स्वामी, दया करे का दियो दिलदारी॥

1. भरियल भण्डारा तुंहिंजा आहिनि, सिक वारा था सभु कुछ पाइनि ।
सुरकी भरे का दियो सिकवारी ॥

2. कर्ज़ कटे कुल मर्ज़ मिटायो, पंहिंजी हलन्दीअ सांणु हलायो।
सुरही कयो हीय मुंहिंजी पछाड़ी ॥

3. ज्ञानी ध्यानी गुणी बणायो, राम सचे जो रंग चढ़ायो।
भुलिजी वञे हीअ दुनिया सारी ॥

4. तरी न ज़ाणा आहियां अयाणी, लहरूं लोदा बेड़ी पुराणी।
पारि पुजायो भव सिन्धु भारी ॥

5. सवें सवाली दर ते अचनि था, मन जूं मुरादूं हासिल कनि था।
हरि दया करि का हिकवारी ॥

भजन-16

तर्ज: जब तुम ही चले परदेश ....

थलु: मुंहिंजा सत्गुरु दीन दयाल, सदा कृपालु टेऊँराम प्यारा।
वञां तोतां बलि बलिहारा॥

1. छदे शहर वैरागु वसायो तो, झंगल खे मंगल बणायो तो।
सर्दीअ ऐं गर्मीअ जा तो कया सहारा ॥

2. तो अन्तर्मुख अभ्यास कयो, ऐं काम क्रोध खे नासु कयो।
तो ध्रुव भगत जियां ध्यान धरियो दातारा॥

3. तूं व्यास मिसल विद्वान हुएं, गुण ज्ञान हूंदे निर्मान हुएं।
तोमें भगतीअ शक्तिअ जा त हुआ भण्डारा॥

4. तो ओम जो जाप जपायो हो, ऐं भिन्न-भिन्न अर्थ बुधायो हो।
देई **गुरुमुख** ज्ञान संदा तूं वियें त इशारा ॥

भजन-17

तर्ज: भागनि वारा से थी जग में ....

थलु: पल पल याद पवे थो मूंखे, सत्गुरु टेऊँराम अदा ॥

1. अठई पहिर उकीर गुरुनि जी, तन में तलब तमाम अदा।
रातो दींहां निण्डड़ी नाहे, फिटी पियो आराम अदा॥

2. अखिनि अगियां अवतार फिरे थो, सत्गुरु सुन्दर श्याम अदा।
नेणनि मंझि निवास करे वियो, निर्वैरी निष्काम अदा॥

3. प्रेम जो प्यालो भरे दिनाईं, पुरि करे पीतुम जामु अदा।
नशो चढ़ियो आ नाम जो हरदम, मस्तौ मस्त मुदाम अदा॥

4. गमनि में हर रोज गुजारे, **गुरुमुख** दास गुलाम अदा।
दर्दनि दिल में दूंहों दुखायो, कोन वणे को काम अदा॥

भजन-18

तर्ज: तुम रूठ के मत जाना ....

थलु: मुंहिंजा सत्गुरु टेऊँराम, तोखे सभई संभारिनि था।
सारी सिन्ध हिन्द जा सभ गाम॥

1. तुंहिंजे दर्शन जा प्यासी, दे दर्शन तूं तिनि खे।
अमरापुर जा वासी॥

2. बिना तुंहिंजे नर नारी, सभु रोअनि था ज़ारोंज़ार।
लगी तिनि खे सिक भारी॥

3. तोखे प्रेमी पुकारिनि था, सभु दर्द मां दाहं करे।
गमगीन गुज़ारिनि था॥

4. तुंहिंजी तार लगी जिनि खे, तिनि घर तड़ व्यो विसिरी।
लगी मेख प्रेमिनि खे॥

5. तोखे **गुरुमुख** सारिनि था, सभु प्रेमी प्रेम मंझां।
जल अखियुनु मां हारिनि था॥

भजन-19

तर्जः संसार है इक नदिया ....

टेकः मेरे सत्गुरु टेऊँराम, तुम्हें बार-बार प्रणाम।
तेरे चरणों में आकर, मेरे मन को मिले आराम॥

1. तेरी महिमा है न्यारी, तुम भक्तनि हितकारी।
तेरी दिव्य कृपा दृष्टी, अद्भुत मंगलकारी।
दीनों का दुःख हरे, है पावन तेरा नाम॥

2. तुम दीनो के दाता, निर्बल के सहारे हो।
भक्तों के भयहारी, प्राणों से प्यारे हो।
श्रद्धा से जो नमन करे, बन जाए बिगड़े काम॥

3. शरणागत होकर जो, तेरा लेता है आधार।
भव सागर दुस्तर से, पल में वो होता पार।
निशदिन जो करे स्मरन, मन्तर साक्षी सत्नाम॥

भजन-20

तर्जः होठों से छू लो तुम मेरा ....

थलुः गुरुदेव मिठा मनठार, मुंहिंजा सत्गुरु टेऊँराम।
इहा दया कयो मूंते, नित जपियां तव्हांजो नाम॥

1. पेरनि सां पंधु करे, अमरापुर धाम अचां ।
नेणनि सां सच्चा सतगुर, मां तोखे रोज दिसां ।
हरदमु हथड़नि सां कयां, तुंहिंजी सेवा मां निष्काम ॥

2. मुहिंजो मन विषयुनि खे छदे, तुंहिंजे ध्यान में मगन रहे।
तुहिंजे सुमिरन ऐं चिन्तन, जी मन में लगन रहे।
भुली सुध तन मन जी वञे, अहिड़ो प्रेम जो पियारियो जाम॥

3. मां दासु आहियां तुंहिंजो, तुंहिंजो ही आधारो आ।
सभु दर दुनिया जा छदे, वतो तुंहिंजो सहारो आ।
तुंहिंजी वाणी बुधी मिठड़ी, अचे आनन्द ऐं आराम॥

भजन-21

तर्जः जाऊं कहां बता ऐ दिल ......

टेकः जय जय हे स्वामी टेऊँराम, निसदिन पुकारूं तेरा नाम।
राम तुम्हीं हो तुम ही शंकर, तुम ही हो मेरे घनश्याम॥

1. है अन्धेरा घना, कुछ ना आता नजर।
मन्जिलों के बिना, चल रहा है सफर।
कुछ ना सूझे मुझे, जाऊं अब मैं किधर॥

2. जग में ढूंढा बहुत, ना सहारा मिला।
डूबती नाव को, ना किनारा मिला।
जिससे पूछा वही, गम का मारा मिला॥

3. जगत से भागकर, आया तेरी शरन।
शान्त कर दो प्रभू, मेरे मन की जरन।
छोड़कर आपको, किसके पकड़ू चरण॥

4. तेरी माया प्रबल, पार इसका नहीं।
मैं तुम्हें जो कभी, भूल जाऊं कहीं।
भूलना ना मुझे, प्रार्थना है यही ॥

भजन-22

तर्जः भीगा भीगा प्यार का समा ....

थलुः आहियां तुंहिंजे दर जो गुलाम, ओ सचा मुंहिंजा स्वामी टेऊँराम।

1. सुहिणी सूरत मुहिणी मूरत, गेरूअ घघे में सूहें।
तेज भरिओ लासानी मुंहड़ो, मनु सभ जो मोहे।
नूर दिसी तुंहिंजे नेणनि जो, भुली वई दुनिया तमाम॥

2. मां भीखारी तूं आहीं दाता, गुरू गरीब निवाज़।
अवगुण भरियल गुण ना कोई, रखु तूं मुंहिंजी लाज।
पापियुनि जी पोथिनि में सभखां, पहिरीं आ मुंहिंजो नाम॥

3. साथी ना को संगी मुंहिंजो, जांचियुमि सभु संसार।
दीनबन्धू सभु साथ छदे विया, वरितुमि तो आधार।
भटिक्यल मुंहिंजे मन खे मिल्यो, तुंहिंजे चरणन में आराम॥

भजन-23

तर्ज: मेरा जीवन कोरा कागज ....

टेक: दिल में हो तस्वीर तेरी, होठों पे तेरा नाम ।
मन मेरा तुमको पुकारे, स्वामी टेऊँराम ॥

1. इक पलक भी मन ये मेरा, तुझको ना भूले ।
मुरझाये ना दुःख में मनुवा, सुख में ना फूले ।
याद में गुजरे मेरी हर, सुबह और हर शाम ॥

2. तेरे ही हाथों में सौंपी, अपनी जीवन डोर ।
गुरुवर है अब मर्जी तेरी, ले जाओ जिस ओर ।
तुम जहां सुख है वहां, तुम बिन नहीं आराम ॥

3. है भरा भरपूर तेरा, करुणा का भण्डार ।
बूंद इक मिल जाए तो हो, भव से बेड़ा पार ।
राम भी तुम हो तुम्हीं हो, बंशीधर घनश्याम ॥

4. पतझड़ सा ये जीवन मेरा, अवगुणों की खान ।
भोग विषयों का ही करता, मैं रहा विषपान ।
बन गया जीवन पीया जब, प्रेम का भर जाम ॥

भजन-24

तर्ज: आ लौट के आजा मेरे मीत .....

टेक: स्वामी टेऊँराम महाराज, तुम्हें भक्तों ने पुकारा है।
अब आके संवारो सब काज, तुम्हें भक्तों ने पुकारा है॥

1. तुम बिन है सूना-सूना ये जीवन, मुश्किल हुई सब राहे।
तुम बिन गुरू जी दिल के ये दुखड़े, जाकर किसे हम सुनाएं।
कोई सुने न ये आवाज़, तुम्हें भक्तों ....

2. तुम ही हो काशी तुम ही हो मथुरा, तुम ही हो गंगा की धारा।
तेरे चरण रज के एक कण का, मिल जाये मुझको सहारा।
हो जाये ये पार जहाज, तुम्हें भक्तों ....

3. स्वर्ग से प्यारा धाम तुम्हारा, अमरापुर सुख राशी ।
अपरम्पार है महिमा आपकी हे सत्गुरु अविनाशी।
अब आन बचाओ लाज, तुम्हें भक्तों ....

भजन-25

तर्ज: मुंहिंजा सत्गुरु मिठा ....

थलु: अचो प्रेमी हली, कन्दो सत्गुरु भली, डिबु वारो
आयो आयो आ छन्छर दिहाड़ो।

1. खण्डू गोठ जो चमकियो सितारो, थियो भागु सभिनि जो भलारो।
आयो शंकर भोलो, पाए मानुष चोलो, मोचारो॥

2. माता कृष्णा जो अङणु वसायो, चेलाराम घर आनन्द छायो।
जगतर जो धणी, आयो मनुष बणीं-सोभारो॥

3. दिनीं माता ज्ञान जी लोली, बोले मदालसा जींअ बोली।
पुट ज्ञानी थिजाइं, नालो अमर कजाइं, उजियारो॥

4. दादा आसन दास जी वाणी, मिठी जीजल बुधाई कहाणी।
बोल बालकु बुधे, वैरागु वधे, मतिवारो॥

5. हल्यो पाठशाला में जानी, मिल्यो आसूराम गुरु ज्ञानी।
गुरु पूरण मिल्यो, सभु मिटिजी वयो-अंधियारो॥

6. गुरु नाम सां लिंवड़ी लाए, वेठो झंगल में आसणु लगाए।
मनु मगन थियो, सभु भुलिजी वियो, वंहिंवारो॥

7. चयो माता वञीं करि कमाई, जंहिंमां सुखी रहीं त सदाई।
चवणु मुंहिंजो मञीं, खोलि हटड़ो वञीं, दीन्हुं सारो॥

8. अमां जूठो जगत जो पसारो, छदे हलिणो आ हिक दींहु सारो।
सुखु तंहिं में नांहे, इंएं दिलिड़ी चाहे, रहां न्यारो॥

9. अमां जोगियुनि बिनां सुञं भायां, तिनि सन्तनि जा पन्ध पुछायां।
खोल्यो हटड़ो आ जिनि, जिति सौदो दियनि-सचवारो॥

10. ही हटड़ो आ हक जो पुराणो, जितां मिलन्दो आ नाम जो नाणो।
कीन कदहीं खुटे, भावें केदो लुटे-वधणहारो॥

11. लॻी लगन रातियुनि जो जाॻी, ठाहिया भॼन वेही वैराॻी।
यकतारो खणी, रीझायो धणी, जीअ जियारो ॥

12. जॾहिं सिन्धू दरियाह आयो काहे, चइनी पासे खंडूअ खे वराए।
अची पंचनि चयो, सभु सवली कयो–ॾियो सहारो ॥

13. सचो दूलहु दरिया शाहु आहे, थो सुवालिनि जा सुवाल पुॼाए।
ईहें विनती कई, वयो पाणी लही–चौधारो ॥

14. वधियो प्रेम खण्डूअ में जॾहीं, कयो तहिंखां किनारो तॾहीं।
संगी साथी न ॿियो, हिकु हथ में खंयो–यकतारो ॥

15. वञीं वारीअ ते आसणु लॻायो, टंडे आदम में ॾेरो ॼमायो।
भुली जॻतरु वयो, नामु निर्मल जपियो, निरंकारो ॥

16. कच्ची कुटिया कखनि जी ठाहे, वेठा मनड़ो मालिक सां मिलाए।
तंहिंते आसणु अॾियो, सभु काटे छॾियो–जमॼारो ॥

17. हुजे केॾो बि सियारो भारी, या ततल हुजे भली वारी।
पदमासन पको, गॾु यार यको–पिरीं प्यारो ॥

18. घड़ी जॾहिं परीक्षा जी आई, अची जुल्मिनि बाहि लॻाई।
चयाऊं आहे न ॿियो, करे लीलां पयो–कृष्ण कारो ॥

19. कई तपस्या जिते वेही भारी, ठही अमरापुरी सुखकारी।
जेको सिकसां निवें, तंहिंजो चमकी पवे– त सितारो ॥

20. सत्नाम साखी जो उच्चारे, तंहिंजा सत्गुरु थो दुखड़ा टारे।
ॼमें सो ना मरे, सहजे ही तरे – भव भारो ॥

21. ढोढो चटणीं छन्छर ॾीन्हुं ठाहे, अची साईंअ खे भोॻु लगाए।
सदा सुख सो लहे, तंहिंजो भरियो रहे – त भण्डारो ॥

22. अची छन्छर ॾीन्हुं सीसु झुकाए, सभु मन जूं मुरादूं सो पाए।
तंहिंजा कारज थियनि, गुरु सभु कुछ ॾियनि–वरे वारो ॥

भजन–26

तर्ज: वारियूं वसायूं तो सॼण ......

थलु: सन्त सियाणो तूं हुएं सन्त सियाणो,
स्वामी टेऊँराम तूं हुएं सन्त सियाणो।

1. गुणवान सचो ज्ञानी ग़मटार तूं हुएं,
बिरिह सन्दे बाग़ जो गुलज़ार तूं हुएं।
कन्दो भॻति भाव जो प्रचार तूं हुएं,
शांति रूप सभ खे हुएं साईं सेबाणो ॥

2. मुल्कनि में वञी तो कयो प्रचार प्रेम जो,
सभ खे ॾिनो तो ई सहचार प्रेम जो।
खुलियलु रख्यो ख़ास तो भण्डार प्रेम जो,
वण्डे ॾिनो सभ खे सचो नाम जो नाणो ॥

3. उजिड़ियल बैबान जे आबाद तो कया,
नंढा वॾा शहर सभई शाद तो कया।
विछिड़िया जन्मनि जा केई याद तो कया,
सत्संग जो हरहंधि लातुइ दाता दीॿाणो ॥

4. जिनिखे न आयो अखरु तिनी ज्ञान तो ॾिनो,
जिनि जा मलीन हृदा तिनि ध्यान तो ॾिनो।
जिनिखे न पुछे जॻ में, तिनि मानु तो ॾिनो,
कहिड़ी तुंहिंजी महिमा ॻाए **माधव** निमाणो ॥

भजन-27

तर्जः ऐ दिल मुझे बता दे ....

थलुः अजु खां वठी ऐ कण्डी, तो में कंडा न थींदा ।
साधनि जा शेवाधारी, मूरौं मंडा न थींदा ॥

1. थींदा भण्डारा भारी-रहन्दा बि शेवाधारी ।
हलन्दे चलन्दे टुलन्दे-कदहीं टुण्डा न थींदा ॥

2. लगन्दा रहन्दा मेला - ईंदा सवें श्रद्धालु।
चढ़दियूं रहंदियूं देगियूं-गुमु भी हण्डा न थींदा॥

3. सत्गुरु टेऊँराम चयो-रहन्दी तो में बि छाया।
पुजंदियूं मुरादूं मन जूं-टेढ़ा दुण्डा न थींदा ॥

4. सत्गुरु दिनी समझाणी-**माधव** समझ वारी।
सिदकी सदाईं सावा-निमंदड़ नंढा न थींदा॥

भजन-28

तर्जः मां स्वाली तो दरि आहियां ....

थलुः मां शेवक तुंहिंजो आहियां-ओ सत्गुर टेऊँराम,
करि महिर अची का मालिक ।

1. सिक तुंहिंजीअ आहि सतायो-दिल दर्दनि दुंहों दुखायो।
नित नेणनि नीरु वहायो-मां दर्शनु तुंहिंजो चाहियां॥

2. तुंहिंजो प्यालो आहे निरालो-करे पीअण सां मतिवालो।
कटे जगजो सभु जंजालो-पी प्यालो जगतु भुलायां॥

3. चवे **चंदन** ऐबनि हाणो-करि सत्गुर तूं ना माणो।
आहियां तो दरि मां त विकाणो-नितु चरने सीसु निवायां॥

भजन-29

तर्जः सावन का महीना ....

थलुः आखाड़ जो महिनो छन्छर करे शोरु।
आयो रे आयो शहर खण्डूअ में, टेऊँराम सिरमोरु।

1. झूलो झुलाए कृष्ना-लोदे पई लादु मां।
गुल भी वसाया देवनि, बीठे आकाश मां।
इन्द्र कयो इशारो, गन्धर्व कनि गोडु॥

2. दर्शन करण केई, आया संत रागी।
दिसी साईंअ खे, चवनि वदभागी।
पकी प्रभूअ सां हीउ, बधंदुमि दोरि॥

3. सत्गुरु मुंहिंजो, वदिड़ो थियड़ो।
माता कृष्णा, गाल्हायो तकिड़ो।
आणे घर में संत, अबा करीं वेठो गोडु॥

4. संत खाईदा अमां, राज़ी से थींदा।
अन ऐं धन जा, भण्डार भरींदा।
खाए सन्तु साधू अमां, खाए भली चोरु॥

5. **जीवन मुक्त** चरने, सीसु झुकायो।
स्वामी टेऊँराम जो, ध्यान लगायो।
कंदो जेको शेवा, थींदो सोई ज़ोरु॥

भजन-30

तर्ज: तुम रूठ के मत जाना ....

थलु: दीं॒हुं छन्छर आयो आ, जनम स्वामी टेऊँराम जो,
मिली शिष्यनि मल्हायो आ॥

1. थियो भा॒गु भलो सभ जो-जेके दीं॒हुं मल्हाइनि था।
आहे वारो वरियो तिन जो॥

2. मिली महिमा गा॒इनि था-कृपा स्वामी टेऊँराम जी।
पंहिंजो घरड़ो वसाइनि था॥

3. भला छन्छर सदोरो आ-करे आश थिए पूरी।
झुलियो घर में हिन्दोरो आ॥

4. चवे **जीवन मुक्त** जाई-खाली कोन वियो दर तां।
मिली सभ खे आ वाधाई॥

भजन-31

तर्ज: से सब स्थल तीर्थ जानो ....

थलु: सत्गुरु टेऊँराम स्वामी, सभिनि सुखनि जो धाम थियो।

1. खूह मां जल सुकी व्यो जद॒हिं,
तंहिं में जल तो जामु कयो॥

2. ख़ाली देग में वारी विझाए,
तंहिंमां सुन्दर ताम कयो॥

3. कण्डा कण्डीअ जा लगा॒ थे जद॒हीं,
तंहिं लसो लारे लाम कयो॥

4. **गणेशानन्द** गुरु महिमा गा॒ए,
डिब॒ खे तीर्थ धाम कयो॥

भजन-32

तर्ज: देख तेरे संसार की हालत ....

थलु: हिन्द ऐं सिन्ध में नालो तुंहिंजो, थी वियड़ो निर्वार,
स्वामी टेऊँराम अवतार॥
जुहिद मंझां तो जोगु॒ कमायो, जा॒णी झूठ संसार, स्वामी..

1. मोहन वारी मुरली व॒जाइ-नर नारियूं सभु मस्त बणायइ।
चइनि तरफ खां बु॒धिजे पेई-तुंहिंजी जै जैकार, स्वामी...

2. जेके तुंहिंजे शरनी आया-तिनि जा तो दुःख दर्द मिटाया।
प्रेमिनि जा तो पल में सत्गुर -बे॒ड़ा कयड़ा पार, स्वामी.....

3. मण्डल तुंहिंजो मौज मचाए-चेट महीने में मेलो लाए,
प्रेम सन्दो प्रचार थिए थो-ख़लक अचे त हज़ार, स्वामी....

4. स्वामी सर्वानन्द कई कमाई-सा॒गी॒ अमरापुर त बणाई।
गंगाराम तंहिं ज्योति दि॒नी तो-जंहिंजो आ चिमकार, स्वामी

भजन-33

तर्ज: पल पल यादि पवे थो ......

थलु: सचु पचु हुयड़ो सत्गुरु मुंहिंजो, टेऊँराम भ॒गवान अदियूं।

1. मौज सां मिठिड़ी मुरली व॒जाए, मनड़ो कयो मस्तान अदियूं।
हरि भ॒गि॒तीअ ऐं प्रेम जो प्यालो, दि॒नड़ो आत्म ध्यान अदियूं॥

2. शहर टण्डे में शाही विधड़ो, अमरापुर स्थान अदियूं।
बाग़ बग़ीचा चमन चौधारी, खिड़िया गुल गुलिस्तान अदियूं॥

3. झंगल में गुरु मंगल कयड़ा, रह्या थे सन्त सुजान अदियूं।
अठई पहर भण्डारो हल्यो थे, थ्यो सभ जो सन्मान अदियूं॥

4. **प्रेमानन्द** मां पूरे गुरु तां, करियां सिर कुर्बान अदियूं।
सेघ में लहंदो सार असांजी, दीं॒न्दो दर्शन दान अदियूं॥

18

भजन-34

तर्ज़ः नाले अलख जे बेड़ो तार ......

थलुः टेऊँराम बाबा अञां भी हुजीं हा,
भगति ज्ञान गुण में सदाईं गजीं हा॥

1. प्रेमिनि जे दिलि में उथनि था ओलाम्बा,
अची दे दिलासो तिनिखे तूं बाबा।
करे महिर मालिक, मण्डल ना तजीं हा॥

2. झंगल खे वसाए मंगल तो बणायो,
वारीअ खे विछाए आसण थिरि लगायो।
मन्दर ऐं कुटियाऊँ, अञां भी सजीं हा॥

3. प्रेमी रोज़ निहारिनि-चिठियुनु लाइ चितारिनि,
करे याद हर हर वचन था विचारिनि।
पना प्रेम वारा, अञां भी मजीं हा ॥

4. **ऊधवदास** सारे संगति थी संभारे,
खणी नेण निमाणा तो दे निहारे।
भक्ति ज्ञान गुणनि सां-संगति खे रजीं हा॥

भजन-35

तर्ज़ः पल पल यादि पवे थो ....

थलुः सत्गुरु मुंहिंजो कामिलि आहे, स्वामी टेऊँराम अदा।
स्वामी टेऊँराम अदा, निर्मल सो निष्काम अदा॥

1. जमन्दे जामु हुयो सो साहिबु, सूरत जो अभिराम अदा।
बालपणे में बोधु करे जंहिं, खूब जपायो नाम अदा॥

2. जवानीअ में जुहिदनि सां ठाह्यो, अमरापुर जो धाम अदा।
सत्संग जो दीबाण लगाए, पियारियो प्रेम जो जाम अदा॥

3. **जय प्रकाश** करियां मां तिनिखे, निविड़ी थो प्रणाम अदा।
महिर करे शल मूंखे रखन्दा, हरदम पंहिंजे शाम अदा॥

भजन-36

तर्ज़ः महिफिल में जल उठी शमा ......

थलुः सत्गुरु टेऊँराम जगत जे-तारण लाइ आयो।
प्रेम प्रकाशी मण्डल बणाए-सभखे जागायो॥

1. ज्ञान ध्यान जी मूरत मुहिणी-जंहिंजी सूरत सभ खां सुहिणी।
भजन भोजन जो सारीअ सिन्ध में-पको विधाईं पायो॥

2. अमरापुर स्थान बणाए-वारीअ ते वियो मौज मचाए।
झंगल में मंगल बणाए मोहन, वेही जोगु कमायो॥

3. प्रेम सन्दो प्रचार सुणाए-भरम सभिनि जा छदियाईं भुलाए।
गोहर ज्ञानीअ सचे ध्यानीअ-नाम जो जाप जपायो॥

4. **धर्मदास** सची गुरु जी बाणी-हर मज़हब खे थे सेबाणी।
अहिड़े सत्गुरु देव सचे जो-गदिजी सभु जसु गायो॥

भजन-37

तर्ज़ः पल पल यादि पवे थो .....

थलुः सत्गुरु टेऊँराम स्वामी, शंकर जो अवतार हुयो।

1. सूरत सुहिणो मन जो मुहिणो, मोहन मिठो मनठार हुयो।
जागन्दी ज्योति ब्रह्म जी जंहिंमें, विरिह वेराग वीचार हुयो॥

2. अन्दर बाहिर सादो सचलो, भगितीअ जो भण्डार हुयो।
पर उपकारी जत सत धारी, नाम नशे निर्वार हुयो ॥

3. कर्म धर्म ऐं ज्ञान ध्यान जो, प्रेम कन्दडु प्रचार हुयो।
सभिनि शिष्यनि श्रद्धालुनि जो नित, राम ज्यां रखवार हुयो॥

4. राग द्वेष ऐं दुःख सुख में सो, सदा **बसन्त** बहार हुयो।
हर मज़हब हर ज़ातीअ सां पिण, पूरो जंहिंजो प्यारु हुयो॥

भजन-38

तर्जः दिल लूटने वाले जादूगर .....

थलुः स्वामी टेऊँराम अवतार हुयो, सभु सन्तनि जो सरदार हुयो।
मिठो मोहन मन जो ठारु हुयो, ऐं दिल जो वद॒ो उदार हुयो॥

1. नंढपिण खां जोग॒ु पचाए व्यो-वारीअ ते विरिह वसाए व्यो।
अमरापुर धाम बणाए व्यो-झंगल में मंगल बणाए व्यो।
झण्डो प्रेम प्रकाशी झुलाए व्यो-कयो प्रेम सन्दो प्रचार हुयो॥

2. जो दर ते आयो थे स्वाली-सो कोन वयो कद॒हीं खाली।
हुई सभ खां सखावत पिण आली-हर करामत में शक्तीशाली।
सदा मुंह में चमकी थे लाली-ऐं संगति सज॒ीअ जो सींगारु हुयो॥

3. ज्ञानिनि में पूरन हो ज्ञानी-ध्यानिनि में हो पूरन ध्यानी।
नित मान हून्दे हो निर्मानी-गुण ज्ञान भग॒ति जी हो खानी।
जो वीर कर्ण जां हो दानी-सदा भज॒न भोज॒न जो भण्डार हुयो॥

4. शुकदेव ज्यां बणिजी त्याग॒ी-कई वृत्ति जग॒त खां वेराग॒ी।
हरि चरननि में हो अनुराग॒ी-नित नाम जपीन्दो हो जाग॒ी।
ज॒णु शंकर जी सूरत साग॒ी-जो **बसन्त** बाग़ बहारु हुयो॥

भजन-39

तर्जः सत्गुरु साहब सन्त मिलाया ....

थलुः स्वामी टेऊँराम जग॒त में, धार लिया अवतारा-सिरजणहारा।

1. ब॒ालक पण खां जत्ती वैराग॒ी-भेद भ्रम मोह ममता त्याग॒ी।
ज्ञानी गुणनि भण्डारा-सिरजणहारा ......

2. खिम्या शील सन्तोष उदारी-दीन दुखियनि जो हो दुखटारी।
अधीननि आधारा-सिरजणहारा ....

3. श्रद्धा सां जे शरनी आया-वेदनि जा तिनि वचन सुणाया।
अनभइ ज्योति उजारा-सिरजणहारा ......

4. **स्वयं प्रकाश** वञां ब॒लिहारी-पतित पावन पर उपकारी।
अखण्ड ज्ञान अपारा-सिरजणहारा ....

भजन-40

तर्जः जरा सामने तो आओ ....

थलुः स्वामी टेऊँराम गुणरास हो, कयो सफलो जंहिं निज स्वास हो।
भक्ति ज्ञान ध्यान खे धारे, कयो प्रेम सन्दो प्रकाश हो॥

1. शहर खण्डूअ में चेलाराम घर, जोग॒ी जन्म आयो धारे।
बचपनि में ई ब॒ोध पिरायो, मोह ममत खे मारे।
सचो जुहदनि सां जोग॒ कमाए, कयो गुर मंतर अभ्यास हो॥

2. राग॒ रूहानी वैराग॒ वारो, ग॒ाए मुल्क मस्तान कयो।
दर्द फिराक जी वाणी ठाहे, विरह अन्दर बइबान कयो।
खणी हथ में वज॒ायो यकतारो, कयो नाम अन्दर त निवास हो॥

3. प्रेम प्रकाशी मण्डल बणाए, प्रेम सन्दो प्रचार कयो।
सत्नाम साखी मंतर जपाए, प्रेमियुनि जो निस्तार कयो।
घुमियो हिन्द सिन्ध में मण्डली वठी, छद॒े आस बणियो त उदास हो॥

4. टण्डे आदम में वारीअ डिब॒ुनि ते, वाह जो हो रंग रचायो हो।
अमरापुर दरिब॒ार बणाए, धर्म जो झण्डो झूलायो हो।
मेलो चेट जी ब॒ारहींअ लग॒ाए, खोलियो **भजन** भण्डारो ख़ास हो॥

भजन-41

तर्जः सारी सारी रात तेरी याद ....

थलुः सत्गुरु स्वामी टेऊँराम प्यारो, वाह जो वज॒ाए वियो नाम नगारो रे॥

1. कहिड़ी कयां तंहिंजी महिमां वद॒ाई, ज्ञान सन्दी जंहिं जोति जग॒ाई।
रखी वैराग॒ु हणी, नींह जो वियो नारो रे॥

2. जोग॒ी जती हुयो आशिकु निमाणो, ज्ञानी गुणी हुयो सालिकु सियाणो।
भग॒ती भाव जो हो भरियल भण्डारो रे॥

3. वारीअ ते वेही विरह वसायाईं, ग॒ोठ-ग॒ोठ में नाम जपायाई।
बणी सैलानी कयो सैर जंहिं सारो रे॥

4. प्रेम धर्म जो प्रचार कयाईं, जग॒तर जो उपकार कयाईं।
दास **भज॒न** रहिणी रही, नेही थ्यो नियारो रे॥

भजन-42

तर्ज: दिन सारा गुज़ारा तेरे अंगना ....

थलु: वरी घर घर में वाधाई-बुधो सभई माई भाई। आयो स्वामी टेऊँराम....

1. धन कृष्णा चेलाराम, धन भागु खण्डूअ जो थियड़ो।
आखाड़ महिनो धन धन, छन्छर जो दीहुं थी वियड़ो।
धन छठि जी तिथी सुहाई, जन्मियो सत्गुरु सुखदाई।

2. थियो जमन्दे ही जामु, गुण ज्ञान भगति जी खाणी।
अनभइ जी ज्योति जगाए, लालण बणियो लासानी।
जंहिं वारी वेही वसाई, अमरापुर दरिबार बणाई॥

3. कयो सिन्ध में ऐं हिन्द में, जंहिं प्रेम सन्दो प्रचार।
सत् धर्म जी सिखिया देई, पाखण्ड जो कयो संघारु।
रखी दिल में साफु सचाई, तन मन जी ममता मिटाई॥

4. करे सेवा सन्तनि जी, खोल्यो भोजन **भजन** भण्डारो,
मेलो चेट में लगाए, वाह जो वजायो वारो।
सत्संग जी मौज मचाई, धुनी राम नाम जी लगाई॥

भजन-43

तर्ज: आओं आओं हे सत्गुरु ....

थलु: कामिल कामिल हो कामिल मुंहिंजो, सत्गुरु टेऊँराम॥

1. खण्डूअ मां गुर अची वसायो, टण्डो आदम गाम।
अमरापुर दरिबार बणाई, वारीअ ते विश्राम॥

2. प्रेम प्रकाशी पंथ कढियाईं, ऐं साखी सत्नाम।
सत्संग जो दीबाण लगाए, प्यारियो प्रेम जो जाम॥

3. देश विदेश में सैर कयाऊँ, मण्डलीअ सहित मुदाम।
गुर मंतर जो जाप जपायो, सर्व सुखनि जो धाम॥

4. **हंस प्रकाश** याद पवे हरदम, सत्गुरु सुन्दर शाम।
सत् उपदेश दिनाईं सभ खे, न्यारो थी निष्काम॥

भजन-44

तर्ज: लेके पहला-पहला प्यार ....

टेक: मेरे सत्गुरु टेऊँराम, सुमरे श्री साक्षी सत्नाम।
बनकर योगी वो बैठा, किया जंगल में विश्राम॥

1. खण्डू नगर में जन्म लिया था, सन्तों से मिल सत्संग किया था।
जीवन मुक्त हो जग में जिया था, प्रेम का प्याला भरके पिया था।
लेके आदी ओऽम नाम, छोड़ा दुनिया का सब काम॥

2. परमेश्वर से लगन लगाई, बचपन से गुरु सेवा कमाई।
सत्गुरु शब्द में सुरति मिलाई, बैठ एकान्त में शान्ती पाईं।
सदैव रहता था निष्काम, सब में व्यापक देखा श्याम॥

3. रेत के ऊपर डेरा लगाया, अमरापुर तिस नाम रखाया ।
कूप गंगा जल ज्यों बनवाया, सबने नहाके आनन्द पाया।
मिटती पाप-ताप की घाम, कीजे सबके पूरन काम॥

4. **गोविन्द** प्रेम का प्याला पिलाया, सत् कर्मो का मग दिखलाया।
धर्म सनातन झण्डा झुलाया, प्रेम प्रकाशी मण्डल बनाया।
करते सत्संग आठों याम, वर्खा वचनों की अभिराम॥

भजन-45

तर्ज: रेशमी सलवार कुर्ता जाली का....

टेक: स्वामी टेऊँराम हुआ अवतारी जी।
शील संजम संतोष खिमिया धारी जी॥

1. वैराग का बीज लगाया, सत्संग का बाग़ बनाया।
अरु प्रेम का पानी पिलाया, गुण ज्ञान फूल फल लाया।
सुगन्ध सुखकारी जी॥

2. बन योगी योग कमाया, मन माया में न लुभाया ।
आत्म का आनन्द पाया, अरु द्वैत को दूर भगाया ।
भ्रम भयहारी जी॥

3. ब्रह्म ज्ञान की बीन बजाई, सत्संग में बैठ सुनाई।
वचनों की वर्खा लाई, गुण ज्ञान रोशनी छाई।
अज्ञ तम टारी जी॥

4. क्या **गोबिन्द** महिमा गाऊँ, कुछ पार नहीं मैं पाऊँ।
चरनों में सीस निवाऊँ, तन मन की भेंट चढ़ाऊँ।
जाऊँ बलिहारी जी॥

भजन-46

तर्जः आ लौटके आजा मेरे मीत......

टेकः मेरे स्वामी टेऊँराम कभी आ कण्ठ लगाओगे।
करूं याद सुबह और शाम, कभी आ दरस दिखाओगे।

1. तेरे दरस की प्यास लगी है, कैसे मैं जीवन बिताऊँ।
तेरा बिछोड़ा सह न सकूं मैं, नैनें नीर बहाऊँ।
मेरे मन में नहीं आराम, कभी मेरा कष्ट मिटाओगे॥

2. तेरे बिना मैं व्याकुल रहता, रैन दिवस मैं प्यासी।
जैसे पपीहा बूंद के कारण, निशदिन रहत उदासी।
कर मेरे पूर्ण काम, कभी मेरी प्यास बुझाओगे॥

3. तेरे बिना मैं तड़प रहा हूं, जैसे चन्द्र चकोरा।
जैसे बादल वर्षा से नित, प्रीति लगावत मोरा।
देकर के मोहि विश्राम, कभी मेरा मन हर्षाओगे॥

4. तेरे बिना मैं जी न सकूंगा, जैसे जल बिन मीना।
खाना पीना सब फीका लगे जब, तेरा दरस नहीं कीना।
निर्मानी हे निष्काम, कभी मेरे दिल को जगाओगे॥

5. **गोविन्द** तेरा दर्शन मांगूं, सत्गुरु शीघ्र आओ।
नैनों को आके शीतल करो अब, अपने चरण लगाओ।
निज प्रेम का योगी जाम, कभी आ मोहि पिलाओगे॥

भजन-47

तर्जः जीए मुंहिंजी सिंध मां त घोरियां .....

थलुः जन्मु मनायो मिली मौज मचायो, मुंहिंजो सत्गुरु आयो।
सत्गुरु आयो स्वामी टेऊँराम आयो,बाबा खण्डूअ वारो आयो॥

1. सभिनी खे लख लख वाधायूं, जन्मु गुरुअ जो गदिजी मनायूं।
शहर-शहर में खुशियूं मनायूं, चरणनि में अजु शीशु निवायूं॥

2. नामु जपाइण सत्गुरु आयो, जीव ईश जो भेदु मिटायो।
धर्मु सनातन झण्डो झुलायो, प्रेम प्रकाशी पंथ बणायो॥

3. घर-घर में अजु ज्योतियूं जागायो, पाण नचो ऐं बियनि खे नचायो।
सभिनी जो थियो लायो सजायो, ताड़ियूं वजायो सब नचो ऐं गायो॥

4. देहि धरे दर्वेशनि वारी, आयो सत्गुरु पर उपकारी।
महिमा जंहिंजी सचु पचु न्यारी, **ब्रह्मानन्द** मां वञां बलिहारी॥

भजन-48

तर्जः ऐ मालिक तेरे बन्दे हम ......

थलुः मुंहिंजा सत्गुरु साईं टेऊँराम, तोखे रामु चवां या घनश्यामु।
आहियां बालकु तुंहिंजो, बुधु अर्ज़ु मुंहिंजो,
कया शेवा सदा निष्कामु॥

1. शल धर्म जी रहिजी अचे, मन मुंहिंजे में भक्ती अचे।
तोसां रहिजी अचे, नींहु निभिजी अचे,
जपियां मंत्रु साखी सत्नामु॥

2. बियो शांती ऐं सुमती अचे, करि कृपा न कुमती अचे।
धरियां ध्यानु तुंहिंजो, जपियां नामु तुंहिंजो,
पायां आत्म आनन्दु सुखधामु॥

3. प्रेमु सत्संग मूं मन में अचे, मनु मालिक सां रंगजी वञे।
ब्रह्मानन्द मां बारु, मुंहिंजो जन्मु सुधारि,
शरण तुंहिंजी वठां सुबुह शाम॥

भजन-49

तर्जः तूने मुझे बुलाया शेरा वालिये ...

टेकः सत्गुरु टेऊँराम जी अब तो आइये,
दर्शन प्यारा प्यारा तो दिखाइये ।
दर्श तो दिखाइये ज्योति जगाइये, भ्रम को मिटाइये॥

1. मैं बालक तू सबका स्वामी, मैं मूर्ख तू अन्तर्यामी।
मेरे मन की प्यास बुझादे, ज्ञान का दीपक मन में जगा दे।
घोर अन्धेरा छाया, अब तो आइये॥

2. धर्म के रक्षक नित अवतारी, आन पड़ी है विपदा भारी।
भटके हुए को राह दिखादे, बिछुड़े हुए को फिर से मिलादे।
भक्तों ने है पुकारा, अब तो संभालिये॥

3. चारों तरफ माया ने है घेरा, सबको सहारा एक है तेरा।
प्रेम का प्याला सबको पिलाके, अपने निज चरणों में बिठाके।
ब्रह्मानन्द बच्चों को न भुलाइये॥

भजन-50

तर्जः सज रही गली मेरी मां ......

थलुः सूंहें मुंहिंजो सांई टेऊँराम, गेरूअ चोले में।

1. वाह गेरू तुंहिंजा भाग भलारा,
बुधाइ त कहिड़ा तो कर्म कमाया।
सुंहनि पिया संत सुजान॥

2. गेरूअ रंग जी आ शोभा न्यारी,
दि॒सण सां भुलजी वई सुध बु॒ध सारी।
दि॒ठम त रब वारी राह॥

3. गेरूअ चोले जी थी सफली कमाई,
ब्रह्मानन्द जहिंजी साख सुणाई।
सभिनि संतनि जो शानु॥

भजन-51

तर्जः किसी राह में किसी मोड़ पर ......

थलुः सत्गुर मिठे तुंहिंजे नाम तां, सभिनी सुखनि जे धाम तां,
ब॒लिहारु मां, ब॒लिहारु मां।
गुरुदेव सुन्दर श्याम तां, सचे स्वामी टेऊँराम तां॥
ब॒लिहारु मां, ब॒लिहारु मां।

1. दे॒ई प्यारु तो पंहिंजो कयो,
दुखु दूरि सभु मुंहिंजो कयो।
रखी हथु मथे ते महर संदो,
सद॒ड़ो कयो मुंखे प्यार मां॥

2. मां अज्ञान निंड में सुतल हुयुसि,
मोह ज॒ार में फाथलु हुयुसि।
दे॒ई बो॒धु मूंखे जग॒ाए तो,
कढ़ियो मोह जे महाज॒ार मां॥

3. मुंहिंजो मनु तपति में ततलु हुयो,
विषयुनि जे गप में गतलु हुयो।
दे॒ई ठारु पंहिंजे वचन संदो,
कयो धार जग॒त असार मां॥

4. मुंहिंजे मनु में हुई कुमती किनी,
कढी कुमति तो सुमती दि॒नी।
दे॒ई नाम जी मूंखे रोशनी,
रोशन कयो अन्धकार मां॥

5. मूंखे मनुष कयो हैवान मां,
कयो देवु॒ तो इन्सान मां।
मनोहर बणायो ब्रह्म तो,
कहिड़ा ग॒णियां उपकार मां॥

23

भजन-52

तर्जः मेरा प्यार भी तू है ....

थलुः मूंखे तार अची, कर पारअची, सचा सत्गुरु टेऊँराम सांईं।
हिन भवसागर मां, भवसागर मां, तार-तार-तार-तार॥

1. भवसागर जे लहरुनि लोदुनि, दाठो मूंखे आहे दुकायो।
हेठि मथे हर हेदांहुं होदांहु, देई फेराटियूं खूब फरायो।
साहु सजो त सुकायो॥

2. मछ कछ मांगर वागुन सां गदु, नांग बलाउनि आहे वरायो।
चक पाए कनि घायलु मूंखे, तिनिखां बाबल अची बचायो।
दाता देर न लायो॥

3. हेठ बि पाणी मथे बि पाणी, जेदांहं निहारियां पाणी पाणी।
विच पाणीअ में गोता खाई, दिलड़ी मुंहिंजी थी वेगाणी।
सत्गुर थीउ तू साणी॥

4. चइनी पासे दिठुमि निहारे, सत्गुर तो बिन वाह न काई।
नदीअ मंझां जींअं कढियुव खिलूअ खे, **मनोहर** सां तींएं थियो सहाई।
हे सत्गुर सुखदाई॥

भजन-53

तर्जः तुम रूठ के मत जाना ......

थलुः मुंहिंजा सत्गुरु टेऊँराम, मुंहिंजो सभनी खां पहिरीं,
तवांजे चरननि में प्रणाम॥

1. बियो सेवा कयां तन सां, अभिमान मिटे मन जो,
सब दूर थियनि संसा॥

2. टियो नामु जपियां तुंहिंजो, मूंते कृपा कयो पंहिंजी,
सदा ध्यान रहे तुंहिंजो॥

3. चोथी मन में हीअ आशा, जनम सफल थिये मुंहिंजो,
मिले अमरापुर वासा॥

4. **जयदेव** करे विनती, तुंहिंजे दर जो आहियां गुलाम,
मुंखे दिजो सदा सुमती॥

भजन-54

तर्जः देख तेरे संसार की .....

टेकः कलयुग में भव तारण आये, त्रेतायुग युग के राम।
मेरे सत्गुरु टेऊँराम॥

1. खण्डू शहर में जन्म इन्हीं का, गुरु है आसूराम जिन्हीं का।
माता कृष्णा बाई जिनकी, पिता है चेलाराम॥

2. भक्तो श्रद्धा मन में भरलो, ये ही राम हैं दर्शन कर लो।
भक्ति मुक्ती के दाता सत्गुरु, सर्व सुखों की खान॥

3. जब भी प्रेमी इन्हे बुलाते, अमरापुर प्रभु छोड़ के आते।
भक्तो के दुखड़ों को हरना, ये ही है इनका काम॥

4. सिर पे हो प्रभु हाथ तुम्हारा, मिलता रहे हमें तेरा सहारा।
दास **जयदेव** ये मांगे तुमसे, दे दो नाम का दान॥

भजन-55

तर्जः ओ मुझे किसी से प्यार हो गया ......

थलुः ओ सुणो सादगी स्वामी टेऊँराम जी, टेऊँराम जी सुन्दर शाम जी।

1. टिनि चइनि दरबारिनि जे हून्दे, महिलात माड़िनि जे हून्दे,
खबड़ खासु दिठमि, कन्दो वासु दिठमि, ऐं अभ्यासु दिठमि।

2. केई कीमती कपड़नि जे हून्दे, रेशम बख्मलि वाइल जे हून्दे,
पाईंदो खादी दिठमि, वृत्ती सादी दिठमि, ऐं समाधी दिठमि।

3. चाहे वेलो हुजे चाहे मेलो, कदहिं अन्दर न खाधो अकेलो,
गदिजी गाईंदो दिठमि, गदिजी खाईंदो दिठमि, ऐं विरिहाईंदो दिठुमु।

4. इन्हीअ रहिणीअ सां उमिरि गुजारी, कई **पहिलाज** सादगी प्यारी,
नालो अमर करे, विया अजर करे, यादि घर घर करे।

भजन-56

तर्ज:सुनो सीता की कहानी .....

थलु:खण्डूअ में देहि धराई, टण्डे में वारी वसाई,
जमण सां जाम, स्वामी टेऊँराम, हुयो को नूर इलाही।

1. कृष्णा भी कीमियागर कुख में, सांढियो साल समूरो।
अठें नवें प्या जमनि मगर ही, महापुरुष हो पूरो।
अगें जन्म जो जोगी हुयड़ो, भगितीअ में भरपूरो।
छठि आखाड़ ते नींगर निकतो, नूर महल मां नूरो।
ऊआं ऊआं जे एवज़ वाई, ऊहां ऊहां थे आई॥

2. चइनि सालनि जो चितड़ो लाए, बुधे अमड़ खां वाणी।
हर हर चवे सुणाइजि माता, हुअण में हैरानी।
माउ मिठी भी दादे आसन जी, वाणी चवे कहाणी।
बोल बुधी पोइ बारन वांग्यां, भरे अख्युनि में पाणी।
हो बालक पर अन्दर सालिक – समुझे गाल्हि सभाई॥

3. अमड़ि विहारियो विद्या खातिर, आसूराम वटि आणे।
हो मास्तर पर सन्त सचो सो, सालिक वतो सुञाणे।
चयईं जोगी तूं अगें जन्म जो, जाणु सभई थो जाणे।
लाइ समाधी सरूप जी, बी छार कंदें छा छाणे।
हिक करणी बी करम गती, टियों सत्गुरु थ्यो सहाई॥

4. नर नूरी हो आदि असुल खां, बाकी बण्यो बहानो।
बँगला बाग़ छदे कयो मालिक, मसाणनि में मैखानो।
वाणीअ जो परवाह पलिटियो, केर पाए पैमानो।
तार तंबूरो हरदम हथ में, मुल्कु मथां मस्तानो।
साल बारहें खां बावीहें ताईं–कामिल कई कमाई॥

5. जोगु कमाए जोगी निकितो, सैर करण सैलानी।
मोहित थी प्या वाणीअ ते, केई लखें लाल लासानी।
के सेवक के शिष्य बणिया के निहंग बण्या नूरानी।
टण्डे में कैलास मिसल दिठी, डिब वारीअ जी जानी।
झंगल में थी मंगल वियड़ा, अमरापुर ठहराई॥

6. हक जो होको बुधी हासिदनि, अन्दर आंदी ईर्खा।
बाग पटे व्या खूह लटे व्या,त बि स्वामी जिन सर्खा।
बाहि दई व्या भूंगियुनि खे त बि, चयाऊं पवे थी पर्खा।
बिया भी सूर सठाऊँ सिर ते जीअं सांवण जी वर्खा।
आह न निकिती दांहं न निकिती, एदी बेपरिवाई॥

7. देहि धरे दर्वेशनि वारी, जग खे तारण आयो।
संतु सचो थी सिन्धु जी बेड़ी, पार उकारण आयो।
दु:ख वारन जा दुखड़ा स्वामी, टेऊँराम टारण आयो।
प्रेमिनि जा **पहिलाज** चवे सभ, कारज संवारण आयो।
पंजनि ततनि जी देहि त्यागे – ज्योती ज्योति समाई॥

भजन-57

थलु: स्वामी टेऊँराम तुंहिंजो झण्डो झूले, प्रेम प्रकाशी वणु फले फूले।

1. हिन्द सिन्ध में तुहिंजीं हाक बुधूँ प्या, साधन सन्तनि में साख बुधूँ प्या।
शहर शहर में मन्दरु खुले॥

2. आश वन्दनि जी आश पुजाए, दुध पुट दई शल वेढ़ा वसाए।
वाउ तत्तो ना तिनि ते घुले॥

3. मानी जंहिंजी मोक हले पई, बेवाहनि जी आकहि पले पई।
हरहंधि तुंहिंजो नांउ हुले॥

4. ओट अझो **पहिलाज** थिए शल, दाणु सचो ददड़नि खे दिए शल।
भरमनि में मनु कीन भुले॥

भजन-58

तर्ज: ऐ मेरे दिल कहीं दूर चल ....

थलु: मिठो नालो स्वामी टेऊँराम जो, जंहिं जाप जपायो सत्‌नाम जो।
ॿेड़ो पार उतारियो आम जो॥

1. हिक करणी कमाई अॻ जी - ॿी अमड़ि दया कई दॻ जी।
टीं सड़क ॾसी गुर सॻ जी, मिली माम वई मिठे मॻ जी।
वञी नगर लधो हरिनाम जो॥

2. वञी जोॻी थी वेठो झंग में, संगी साथी न कोई संग में।
रूहु रङिजी व्यो राम रंग में, हुई ओम् सोहम् धुनी अंग में।
भुली भासु व्यो ताम आराम जो॥

3. ॾिसी टण्डे वारीअ जे चोट खे, ठाह्यो अमरापुर जे कोट खे।
वेही रांवल हलायो रोट खे, ॿी घुरिज कान हुई घोट खे।
हले भॼन भोॼन सुबह शाम जो॥

4. **पहिलाज** चए प्रान आधार हो, सचो सिन्धुड़ीअ जो सरदार हो।
जंहिंजो सभिनी साण प्यार हो, कन्दो ज्ञान सन्दी गुफ्तार हो।
जपाए नाम वियो सुखधाम जो॥

भजन-59

तर्ज: ओ मुझे किसी से प्यार हो गया ......

थलु: ओ ओ ओ ओ जोॻी स्वामी टेऊँराम हो,
टेऊँराम हो, सुन्दर श्याम हो॥

1. छॾे शहर छिपी शमशान में, वञी दाता वेठो हो ध्यान में।
कयो झुॻटनि में जोॻु, जीअं लखे न लोॻु, कोई बछे न भोॻु॥

2. टण्डे आदम वारीअ जा ढेर हुआ, आसपास गिदड़ बघड़ शेर हुआ।
ठाही अमरापुरी, ॼण झाड़ी जुड़ी, वेठा सन्त सुरी॥

3. लॻे चेट जे ॿारहींअ मेलो, गंगा कुम्भ जो जुड़ियो ॼण झमेलो।
अखण्ड बाणी हले, अखण्ड पाणी हले, अखण्ड मानी हले॥

4. हेॾांहुं हले भोॼन जो भण्डारो, होॾांहुं हले भॼन जो भण्डारो।
घोट गाना करे, मिठड़ी माना करे, मन मस्ताना करे॥

5. **पहिलाज** वसाए व्या वारी, कनि दर्शन पिया नर नारी।
सचो स्वामी हुयो, अंतर्यामी हुयो, निष्कामी हुयो॥

भजन-60

तर्ज: घर आया मेरा परदेसी .....

थलु: स्वामी टेऊँराम मिठा, सन्त सचा हुआ सन्तनि में।

1. चेलाराम घरि देहि धरे, शहर खण्डूअ में जोति ॿरे।
जोॻी सचा हुआ जोॻिनि में॥

2. ॿोध पिरायईं ॿचपन में, ख्याल पचायईं खॿड़नि में।
भॻत सचा हुआ भॻतनि में॥

3. तार गॾे यकतारे सां, प्रेम निभायईं प्यारे सां।
प्रेमी सचा हुआ प्रेमिनि में॥

4. रागु वैराॻीअ ॻायो हो, मुल्कनि खे मस्त बणायो हो।
भाउ भरियलु जंहिंजे भॼननि में॥

5. **पहिलाज** प्रेमी पुकारिनि था, अमरापुर ॾे निहारिनि था।
सार सची आहे सॼणनि में॥

भजन-61

तर्ज: देख तेरे संसार की हालत .....

थलु: अमर देश खां देहि धरे आयो, स्वामी टेऊँराम,
बणायो अमरापुर जो धाम।

1. अमरापुर गिरिनार जा ॿेला, गुरु गोरख जा चोरासी चेला।
ॿारहं माह मता हा मेला, सुबह ॾिसो तोड़े शाम॥

2. प्रेम प्रकाशी ठाही टोली, ॿार ॿुढनि खे ॿुधाई ॿोली।
सिख्या सुणाई सभ खां सौली, साखी ऐं सत्‌नाम॥

3. खणी यकतारो सैर जे सांगे, गलीअ गलीअ गुरु गोरख वांगे।
नाम जो दान ॾिनो मन मांगे, जॻियासुनि खे जाम॥

4. मोक हली थे मड़िॾ जी मानी, चारई वरण जमिया थे जानी।
मानो कर्ण कुॿेर हो दानी, निर्मोही निष्काम॥

5. अइनल हक जो नारो हणी व्यो, मड़िॾु सचो मन्सूर बणी व्यो।
प्रेमिनि खे **पहिलाज** वणी व्यो, सभई करनि प्रनाम॥

26

भजन-62

थलु: वारियूँ वसायूँ तो सजण वारियूँ वसायूँ।

1. जंहिं डिबुन मथां वारीअ सन्दा ढेर थे दिठा।
चौतरफ कण्डा किरिड़ बबुर बेर थे दिठा।
आस पास गिदड़ बघड़ सूअर शेर थे दिठा।
तंहिं झंगल में तो जोगी अची जायूँ बणायूँ॥

2. कण्डीअ हेठां कूँधर वेही रासि रचायइ।
मोहन वारी मुरली खणी मौज मचायइ।
दुथ ऐं दौंरा पेरूँ खाई पाणु पचायुइ।
सबुर शुकुर जूँ हुयूँ तो वात में वायूँ॥

3. सूर सठइ सख्त मगर सूँ न कई तो।
हिन्द सिन्ध में तुंहिंजी हाक मगर हूँ न कोई तो।
तन खे दुई तपति मगर तूँ न कई तो।
सारी उमिरि सजण तो हुयूँ नीत्यूँ निभायूँ॥

4. चारई वरण हाण तुंहिंजा चरन चुमनि था।
शाह छा गदाह तोखे निविड़ी निमनि था।
पहिलाज जहिड़ा केई तो दरि महिर मंगनि था।
कहिड़ियूँ लिखी कहिड़ियूँ लिखां तुंहिंजूँ कमायूँ।

भजन-63

प्रार्थना

थलु: सतुगुरु टेऊँराम महराज, कयो साध संगति ते बाझ।

1. हिक दुखड़ा दूर कजो, सभु कष्ट काफूर कजो।
ही निरोयो नूर कजो, कजो मनु न कदहिं मोथाज॥

2. बियो शांति ऐं सुमति दिजो, सदा भाउ ऐं भगति दिजो।
कटे मोह ममत छदिजो, ऐं दिजो सुखनि जो साज॥

3. टियों धर्म सां रहिजी अचे, लज शर्म सां रहिजी अचे।
शुभ कर्म सां रहिजी अचे, ऐं पार कजो ही जहाज़॥

4. चोथों पति रखु पीरीअ जी, हिन लाल फकीरीअ जी।
अर्दास अख़ीरीअ जी, कजो पासि पल्लव **पहिलाज**॥

भजन-64

तर्ज: ऐ नाग कहीं जा बसियो .....

थलु: स्वामी टेऊँराम आ जीअरो रे, मतां समझो वियड़ो रे।

1. जंहिंजे पुठियां चेला चेलियूँ, वेठा वधाइनि वाड़ी।
केरु चवे से जीअरा नाहिनि, अमर पट्टी जिनि पाढ़ी।
सदा कर्मु सचो तंहिं कयड़ो रे॥

2. जिनिजे पुठियां मन्दर आखाड़ा, मोक हले पई मानी।
नालो तिनि जो केर विसारे, रागु सन्दनि रूहानी।
इहो रूहु पोयनि में पियड़ो रे॥

3. जिनिजी बाणी अमर कहाणी, पोथिनि में पई पढ़िजे।
दुश्मन जे भी दिलि तां नालो, भुलिजी नथो प्यो भुलिजे।
बरे घर घर ज्ञान जी दीयड़ो रे॥

4. दीद वारनि जे दिलि में आहे, दर्वेशनि जी धूणी।
बे दीदनि पहिलाज न पाती, पहे मंझां का पूणी।
कंहिं लालण पातो लीअड़ो रे॥

भजन-65

तर्ज: जिन्दगी प्यार का गीत है ....

थलु: जागियो कृष्णा जो पूरब करम, स्वामी टेऊँराम वरितो जनम।

1. पाए झोलीअ में झूटा दिना थे, छिर्क मदाल्सा ज्यां छिना थे।
जीअं भासे न भोलो भरम॥

2. इन्हींअ आसीस साओ सलो कयो, सले साए मां वणु भी भलो थियो।
जंहिं में मिठिड़ा थ्या मेवा नरम॥

3. हिक वैराग बियो फलु फकीरी, दियो वहदत चौथीं यादगिरी।
पंजों मालिक जो मन में मरम॥

4. छहों शान्ती सतों फलु सादगी, अठों अनभइ नाईं आज़ादगी।
दहों दिल में दया ऐं धरम॥

5. इहे दुनिया खे फलड़ा दुई व्या, खाओ खाराय ईंएं जो चई व्या।
पातो **पहिलाज** पद हो परम॥

भजन-66

तर्जः जाने वाले ....

थलुः आशिक अहिड़ो न थीन्दो, स्वामी टेऊँराम जहिड़ो।

1. कृष्णा भी झले झोली, लालण खे दिनी लोली।
बचपन जी ऊहा बोली, साईंअ थे समझी सौली।
बालक अहिड़ो न थीन्दो, स्वामी टेऊँराम जहिड़ो॥

2. सत्संग में सुरिति लागी, ज्योति मंझां ज्योति जागी।
वृत्ती भी थी वैरागी, दुनिया जी तमन्ना त्यागी।
सालिक अहिड़ो न थीन्दो, स्वामी टेऊँराम जहिड़ो॥

3. दावन जे दास आया, त्यागे ममता ऐं माया।
नींगर समझी निपाया, तारी कुलनी जी काया।
मालिक अहिड़ो न थीन्दो, स्वामी टेऊँराम जहिड़ो॥

4. पंहिंजोई पंथ ठाह्यो, पंहिंजोई ग्रंथ ठाह्यो।
पंहिंजो प्रनाम ऐं **पहिलाज**, पंहिंजो धाम ठाह्यो।
ख़ालिक अहिड़ो न थीन्दो, स्वामी टेऊँराम जहिड़ो॥

भजन-67

तर्जः तोड़ दे दुनिया की दीवार ......

थलुः आए थे स्वामी टेऊँराम, लाए थे साक्षी अरु सत्नाम,
सन्देशा साथ ये लाया था ॥
बनाकर अमरापुर का धाम, अपना भी अमर किया था नाम,
अमर में जाय समाया था ॥

1. हुए जब बारह बरस वाले, अचानक खुल गए वो ताले।
मिला आइ सत्गुरु आसूराम, सुनाया गुरु मन्तर सुखधाम।
साधन भी साथ सुनाया था ॥

2. गए जब पढ़ने के लीए, कण्ठ दो अक्षर उन कीए।
कहा है ओम् में आराम, नहीं है और पढ़न से काम।
पढ़े क्या पढ़ा पढ़ाया था ॥

3. गृहस्थ की छोड़ दई आसा, किया जा झंगल में वासा।
समाधी लग गई आठों याम, भूल गया ताम और आराम।
शरीर का भास भुलाया था ॥

4. चली जब वाणी की धारा, हाथों में ले तब इकतारा।
छोड़के अपना घर अरु गाम, सुनाने प्रभू का पैग़ाम।
गीत जा घर घर गाया था ॥

5. देखा बालू का पर्वत बन, किया वहां आश्रम स्थापन।
कहा **पहिलाज** करो विश्राम, इसी का अमरापुर है नाम।
जंगल में मंगल बनाया था ॥

भजन-68

तर्जः ग़म दिए मुस्तकिल ......

थलुः तिखी तूँ न बुधमि, चपें चूँ न बुधमि, तोड़ ताईं,
सच्चो सन्त हुएं टेऊँराम साईं॥

1. जदहिं बियाईअ जा बारण बरिया थे, दिसी साकत खूबु सड़िया थे।
बुरी बूँ न बुधमि-सफा सूँ न बुधमि, तोड़ ताईं॥

2. जदहिं जाहिल व्या झुगियूँ जलाए, वेठें खबड़नि में तदड़ो विछाए।
वेण न वातो बुधमि-ना परातो बुधमि, तोड़ ताईं॥

3. जदहिं खूहड़ो लटे व्या वांदा, भरे मटड़ा तो गोठनि मां आंदा।
कड़ो न अखरु बुधमि-सबुरु शुकुरु बुधमि, तोड़ ताईं॥

4. जदहिं बाग़ तो हथ सां बणायो, अची पापिनि तंहिंखे पटायो।
चितु न चिड़ंदो दिठमि, मुखड़ो टिड़ंदो दिठमि, तोड़ ताईं॥

5. पुछो प्रेमिनि ईएं कीअं रहिबो, चयाऊँ सहिबो तदहिं पुटड़ा लहिबो।
सुखुनि सुहिणा बुधमि, मन जा मुहिणा बुधमि, तोड़ ताईं॥

6. धनु सबुरु तव्हांजो सहारो, कन्दो **पहिलाज** को कुर्ब वारो।
नज़र नूरी दिठमि-सा सबूरी दिठमि, तोड़ ताईं॥

भजन-69

तर्ज: ग़म दिए मुस्तकिल

थलु: शल वधन्दी रहे, शल वसन्दी रहे, ॾींहं ॾिहाड़ी,
स्वामी टेऊँराम जी हीअ वाड़ी।

1. हिन वाड़ीअ खे पाण पोखे व्या, दई मोख सचो से मोखे व्या।
धर्मराइ सन्दी, ढल कान पवन्दी, कोॾी कारी॥ स्वामी....
2. हिन वाड़ीअ जा मिठिड़ा मेवा, कनि हिन्द सिन्ध में प्या सेवा।
हिकवार हली, ॾिसो ॿूटा ॿली, जीअं झाड़ी॥ स्वामी...
3. हिन वाड़ीअ जी पाड़ पाताली, पोखे पुरुष वियो आ अकाली।
झक झोला लॻा, ग़ैबी गोला लॻा, कंहिं न उजाड़ी ॥ स्वामी....
4. हीअ वाड़ी अमरापुर खां, पोखे धणीअ मुकी आहे धुरि खां।
रची रासि थिए, पची पासि थिए, फुलवाड़ी ॥ स्वामी...
5. **पहिलाज** प्रेमी पूजाऊँ, कनि आशिक प्या आसीसाऊँ।
शल शादि थिए, आबादि थिए, गुलज़ारी ॥ स्वामी...

भजन-70

तर्ज: सिक में आहिन फाइदा ......

थलु: जे चई जोॻी बणां बणु स्वामी टेऊँराम ज्यां।
जे चईं साधू बणां बणु स्वामी टेऊँराम ज्यां॥

1. सूर सख्तियूँ सभु सही साजन कॾहिं ना सूँ कई।
जे चईं खिम्या खणां खणु स्वामी टेऊँराम ज्यां॥
2. राॻु हो वेराॻु हो जो थे वण्यो वेरिनि अॻियां।
जे चई मां भी वणां वणु स्वामी टेऊँराम ज्यां॥
3. निसंगु थी निष्कामु थी जंहिं नाम जो नारो हंयो।
तूँ भी जे नारो हणी हणु स्वामी टेऊँराम ज्यां॥
4. शिष्यनि शेवकनि जो हो पाल्यो धणु धनारनि ज्यां बणी।
तूँ बि जे धारीं त धारि धणु स्वामी टेऊँराम ज्यां॥
5. कढी कुमति ॾींदो सुमति **पहिलाज** चए परमात्मा।
जे बणीं तोलो त थीं मणु स्वामी टेऊँराम ज्यां॥

भजन-71

तर्ज: आओ बच्चो तुम्हें दिखाएं ......

टेक: थोड़ा सा इतिहास सुनो, अब स्वामी टेऊँराम का।
नगर नगर में नाद बजाया, था साक्षी सत्नाम का, धन गुरु टेऊँराम॥

1. जन्म समय में झीनी झीनी, नभ से बाणी बोल उठी।
जन्म लिया है योगी ने सुन, माता आंखें खोल उठी।
अद्भुत रूप अनोखा देखा, डगमगाती डोल उठी।
लोरी देके लाल लुॾाया, सिर चूमा सुखधाम का॥

2. चार बरस में चानण होया, जैसे चान्द सितारों में।
दादाजी की बाणी सुनकर, गद् गद् हो गुफ्तारों में।
और सुना अब और सुना कह, अम्मां को ईशारों में।
जब देखो तब मुख से सुमरन, होता था हरिनाम का॥

3. फिर तो आज्ञा पाइ पिता की, पाठशाला में जाना था।
पूरब जन्म के पढ़े पढ़ाए, पढ़ना एक बहाना था।
मास्तर इक गुणवान वहां का, साचा सन्त सुजाना था।
सात बरस में सत्संग मिल गया, स्वामी आसूराम का॥

4. बारह बरस में योग की ज्वाला, उमड़ उठी थी आहों में।
कब गांवों में कब राहों में, कब दरखत की छाहों में।
कब मरघट कब कब्रिस्तान कब, गिरि की बैठ गुफाओं में।
भूल गया सब खाना पीना, ज्ञान सुबह ना शाम का॥

5. ज्यों ज्यों जवानी बढ़ती जावे, त्यों त्यों जोश भी बढ़ता था।
जोश बढ़ा तो साथ साथ में, दिल का होश भी बढ़ता था।
होश बढ़ा तो शील सब्र अरु, सम सन्तोष भी बढ़ता था।
जोश में जोश गया जल सारा, मोह कोह अरु काम का ॥

6. अब तो बाणी बरसन लागी, ज्यों बादल की बौछारा।
और साज़ सब सुर ही में थे, एक उठाया इकतारा।
राम नाम का वणिज साथ ले, गाता जावे वणजारा ।
गूँज उठी सब गली गली अरु, कोना कोना गाम का॥

7. फिर जो अमरापुर बनवाई, देख पर्वत इक बालू का।
आस पास में घोर झंगल था, शेर बघड़ अरु भालू का।
भोला बाबा बन कर बैठा, जैसा शिखर हिमालू का।
लाखों शिष्य बने श्रद्धालू, बोध लिया विश्राम का॥

8. आप गए अमरापुर पाछे, सुन्दर सिख्या छोड़ गए।
साक्षी शिवोहम् **पहिलाज** बताकर, भ्रम का भाण्डा फोड़ गए।
प्रेम प्रकाश मण्डल की शाखा, शहर शहर में जोड़ गए।
संचालक सर्वानन्द स्वामी, अब अमरापुर धाम का॥

भजन-72

तर्जः सुनो सुनो ऐ दुनिया वालो .....

थलुः अमर कलम से लिखी जाएगी, आपकी अमर कहानी।
सिन्ध देश के स्वामी आप थे, टेऊँराम गुरु ज्ञानी॥

1. बारह बरस की वस्था में, बन जोगी जोग कमाया।
छूट गई ममता तन मन की, मोह ममत अरु माया।
अनुभव रूपी खिड़की खुल गई, चली बोध की बानी॥

2. बीस बरस की वस्था में तुम, घर को छोड़ सिधाया।
सिन्ध हिन्द की गली गली में, सत् उपदेश सुनाया।
लाखों शिष्य बने श्रद्धालू, लेकर नाम निशानी॥

3. तीस बरस की वस्था में तुम, अमरापुर स्थान किया।
चैत्र मास का महान उत्सव-जीते जी निर्मान किया ।
कथा कीर्तन अखण्ड चले अरु, अखण्ड चले अन्न पानी॥

4. पचपन की जब वस्था होई, परम धाम पग धारा।
ज्योती ज्योति समाए स्वामी, ब्रह्मलीन भए प्यारा।
जीवन अपना अमर बनाया, अमर करी कुर्बानी॥

5. पीछे आपके मण्डल आपका, हिन्दुस्तान में आया।
हिन्दुस्तान के शहर शहर में, सुन्दर मन्दिर बनाया।
पहिलाज कहे अब स्वामी सर्वानन्द, करता है अगवानी॥

भजन-73

तर्जः दिल लूटने वाले जादूगर...

थलुः तोखे स्वामी टेऊँराम चवां, या शंकर जो अवतार चवां।
तुंहिंजी अमरापुर कैलाश चवां, या सुरग॒ पुरीअ जो द्वार चवां॥

1. तोमें जोगि॒नि वारी जुगि॒ती हुई, ऐं भग॒त कबीर ज्यां भगि॒ती हुई।
तोमें शेरनि वारी शक्ती हुई, तुंहिंजी वीरनि वारी वृती हुई।
तुंहिंजी अनभइ वाणी अनंती हुई, जा वेदनि जे सम सार चवां॥

2. तुंहिंजे राग॒ में राज़ समायलु हो, हर लुत्फ़ में साज़ समायलु हो।
तोमें निविड़त न्याज़ समायलु हो, हर शख़्स तव्हां दां॒हं मायल हो।
तुंहिंजे भज॒न में भाव समायलु हो, तोखे भगि॒तीअ जो भण्डार चवां॥

3. तूं ज्ञानिनि में वडो॒ ज्ञानी हुएं, ऐं ध्यानिनि में वडो॒ ध्यानी हुएं।
गुणवाननि में गुणवानी हुएं, निर्माननि में निर्मानी हुएं।
तूं दानिनि में वडो॒ दानी हुएं, तोखे दिलि घुरियो दातार चवां॥

4. तुंहिंजी सिन्ध सजी॒अ में साख हुई, ऐं हिन्द पंजाब में हाक हुई।
जा **परमानन्द** खे प्यास हुई, सा हर दिलि अन्दर खुवाहिश हुई।
तोमें दा॒तर वारी दा॒ति हुई, तोखे दे॒ह धणी दा॒तार चवां॥

भजन-74

तर्ज: नगरी नगरी द्वारे द्वारे ......

थलु: घर घर में तस्वीर डि॒सां थो स्वामी टेऊँराम जी।
टुकड़ी वेई कीअं अघामी स्वामी टेऊँराम जी॥

1. सन्त हज़ारें थ्या दुनिया में लखनि अन्दर ही लालु हो।
हरिश्चन्द्र ज्यां हिरदो जंहिंजो दान करण में विशाल हो।
हिन्द सिन्ध में मशहूर सख़ावत स्वामी टेऊँराम जी ॥

2. सन्तनि जी सेवा मां साजन ऋद्धीअ सिद्धीअ खे पातो हो।
सभमें साईं हिकड़ो आहे ॼाण इहोई ॼातो हो।
कंहिंखां नाहे गुझी सदाकत स्वामी टेऊँराम जी॥

3. प्रेम रखी जे अचनि प्रेमी मतिलब तिनि जा पूरा थियनि।
निपुटा बणिजनि पुटड़नि वारा निर्धन खे धन दौलत डि॒यनि।
परमानन्द मूं डि॒ठी करामत स्वामी टेऊँराम जी॥

भजन-75

तर्ज: देख तेरे संसार की हालत ......

थलु: शहर खण्डूअ में पैदा थियड़ो सन्तनि जो सरदार,
स्वामी टेऊँराम अवतार।

1. पिता चेलाराम सन्तनि सेवी, माता जंहिंजी कृष्णा देवी।
धारे आयो मानुष देही, खुश थिया नर नारि सभेही।
जन्म वठण सां जेदा॒हुं तेदा॒हुं, थी वई जै जैकार॥

2. नंढपिण खां होसि नाम जो नालो, इन्हीअ नशे में हो मतवालो।
पीतो हो जंहिं प्रेम प्यालो, मोह ममत खां रही निरालो।
हरिश्चन्द्र ज्यां पूरन हुयड़ो, दानी सो दातार॥

3. वारीअ ते व्यो कोटु अदा॒ए, अमरापुर दरबा॒र बणाए।
सत्‌नाम साखी मन्त्र बु॒धाए, देश विदेश में नाम जपाए।
सत्संग द्वारा करे वियो सो, प्रेम सन्दो प्रचार॥

4. दर्शन सां दुःख दूर थियनि था, जन्म जन्म जा पाप मिटनि था।
संसा दिल जा चूर थियनि था, पूरब जन्म जा भाग॒ खुलनि था।
परमानन्द कई जिन शेवा, भरिजनि तिनिजा भण्डार॥

भजन-76

तर्ज: बदली से निकला है चांद ....

थलु: स्वामी टेऊँराम सुधीर, प्रेमिनि जूं थो पल में आशूं पुॻाए।
ज़ाहिर अथव ज़िदह पीरु, लहिरुनु मां थो लालण पार लॻाए॥

1. जेके अचनि था दर ते स्वाली, वञनि मुरादूं पाए मोटिया न खाली,
जंहिंते करे साईं नज़र महिर जी, नज़र महिर जी,
तिन जी कटे थो सभु पीर, बाबल मुंहिंजो उजिड़ियल अङण वसाए।

2. साजन जी हुई सूरत सुहिणी, मिठिड़ी वाणी जंहिंजी मूरत मोहिणी,
राणल जी हुई नेक जो रहिणी, नेक जो रहिणी,
लखें थ्या बि॒या बि फकीर, बाबल मुंहिंजो बिगिड़ियल भाग॒ बणाए।

3. भुल्यलनि खे व्यो राह बताए, सत्‌नाम साक्षी मंत्र जपाए,
सत्संग जी व्यो रिमझिम लाए, रिमझिम लाए,
परमानन्द हो गम्भीरु, दोखियुनि जा थो दुखड़ा दर्द मिटाए।

भजन-77

तर्ज: मेरी मुहब्बत पाक मुहब्बत.....

टेक: स्वामी टेऊँराम की अमर कहानी, अमर कहानी अमर जिंदगानी।
जब तक सूरज चान्द गगन, तब तक रहेगी अमर॥

1. बचपन से ही गुरु भक्ती में, मन की वृती लगाली।
चरन गुरू के मोक्ष समझकर, जीवन नैया डाली॥

2. प्रेम प्रकाशी फुलवाड़ी में, फूल खिला इक न्यारा।
स्वामी आसूराम की महर मया से, चमका एक सितारा॥

3. देश देश में घूम घूमकर, सत्य उपदेश सुनाया।
मस्त बने वो मस्ती में रहकर, मस्ती का रंग चढ़ाया॥

4. परमेश्वर से प्रीति लगाकर, जीवन ज्योति जगाई।
सन्त जनों की सेवा करके, जीते मुक्ती पाई॥

5. हर मानव से प्रीति बढ़ाकर, प्रेम की गंगा बहाई।
परमानन्द का आनन्द पाकर, ज्योति में ज्योति समाई॥

भजन-78

तर्ज: बहारो फूल बरसाओ ....

थलु: ग॒ायो सभु गीत खुशियुनि जा, स्वामी टेऊँराम आयो आ।
खण्डूअ जे नंढिड़े नगर में, सचो सुखधाम आयो आ॥

1. ओ धरिती ध्यान सां स्वागत, कजांइ हिन नूरी नज़र जो।
सदा रहिमत सां तूं रखिजांइ, ख़्याल हिन रूहे रहिबर जो।
खुलिया हनि भाग॒ प्रेमिनि जा, स्वामी टेऊँराम आयो आ॥

2. ही जोगी॒ जानि खां प्यारो, था कयूँ तोदां॒हं रवानो।
खणी तोदां॒हं थो अचे, नाम जो भरपूर ख़जानो।
लाहीन्दो भरम भुलियनि जा, स्वामी टेऊँराम आयो आ॥

3. अथई अवतार शंकर जो, मतां अणजा॒ण तूँ बणिजीं।
आयो थी पाण परमेश्वर, मतां इन्सान तूँ समझीं।
लाहीन्दो मर्ज़ मर्ज़िनि जा, स्वामी टेऊँराम आयो आ॥

4. **परमानन्द** प्रेम प्रकाशी, पोखीन्दो पाण फुलवाड़ी।
इहो बू॒टो थीन्दो गुलशन, कन्दो हिक दीं॒हुं गुलज़ारी।
अघाईन्दो अर्ज़ अर्ज़िनि जा, स्वामी टेऊँराम आयो आ॥

भजन-79

तर्ज: वो दिल कहां से लाऊँ .....

थलु: छन्छर डि॒हाड़ो॒ आयो, घर घर वरी वाधाई।
जगमग जगाये जोती, घर घर खुशी मनाई॥

1. धन धन खण्डूअ जी नगरी, धन धन आ सिन्धुड़ी सारी।
धन धन पिता ऐं माता, जिन कई आहे कमाई॥

2. जग॒ खां करे किनारो, झंगलु वञी वसायो।
तन मन तपाए पंहिंजो, निंडड़ी मिठी फिटाई॥

3. घर जा सामान विकिणी, चालू कयो भण्डारो।
अणखुट हले अव्हांजो, सभको वञे प्यो खाई॥

4. दुनिया जद॒हिं सतायो, पाड़ौं पटण थे चाहियो।
सभ में डि॒सी सो साखी, दिल कंहिंजी ना दुखाई॥

5. **परमानन्द** आहे गोलो, मेटियो भरम ऐं भोलो।
मिलियो आ मनुष चोलो, तंहिंखे सफल बणाईं॥

भजन-80

तर्ज: वो भूली दास्तां, लो फिर याद आ गई ......

थलु: स्वामी टेऊँराम जी कमाई थी अमर,
जग॒त में व्यो बणी सदाईं सो अमर।

1. हुई रेती ऐं बि॒या रोड़ा, कंडनि किरिड़नि सन्दा लोढ़ा,
डि॒बू॒ ढिग॒ ढेर वारीअ जा, लुकूं तूफान वाचूड़ा।
घणी गर्मी हुई झक झोला, अचनि प्या आग जा ओला,
विछूं वासींग कारीहर, हुआ नांगनि सन्दा टोला।
उते दे॒रो कयो साजन, जिते हो झंग झर, स्वामी टेऊँराम

2. हुयूं चीतनि जूं चिंगारूं, छितनि शेरनि जूं गजकारूं,
गिदड़ बघियड़ भयानक हुआ, उन्हनि जूं कहिरी कूकारूं।
हुआ घट घेड़ सभु औखा, टिकनि ना पेर जिति सौखा,
पखीअ जो पेरु ना पिड़ में, हुआ ज॒णु जान जा जोखा।
उते दे॒रो कयो दिलबर, जिते भड़ भांग बर, स्वामी टेऊँराम

3. झंगल झाडियूं थ्यूं गुलज़ारियूं, किरिड़ कण्डा थ्या फुलवाड़ियूं,
मिट्टीअ जे ढेर मां मटिजी, बण्या महिलात ऐं माडियूं।
बरनि में थी व्यूं बाज़ारियूं, झुकण आया थे नर नारियूँ,
ऊँदहि अंधकारु हो जाते, उते थ्यूं दे॒ह जूं डि॒यारियूँ,
परमानन्द बणिजी वई दरिबारि सुहिणी अमरापुर।

भजन-81

तर्ज: छुप गया कोई रे दूर से पुकार के .....

थलु: कहिड़ी मां महिमा गायां, सन्त सचारे जी।
दर्वेश दाता स्वामी, टेऊँराम प्यारे जी॥

1. सदाचारी शीलवन्त गुणी गुणवान हो,
अनभइ जो दाता साईं वदो विद्वान हो।
कहिड़ी कहाणी कयां, सिन्ध जे सितारे जी॥

2. स्वाली न खाली वियो, कदहिं हिन द्वार तां,
अतिथी न बुखियो मोटियो, कदहिं दरिबार तां।
सख़ावत सुणायां कहिड़ी, सिंध जे सोभारे जी॥

3. सबुरु ऐं सादगी, धीरजधारी हो,
प्रीतमु मुंहिंजो सो, पर उपकारी हो।
परमानन्द गाल्हि कयां छा, प्रान आधारे जी॥

भजन-82

तर्ज: ओ दूर के मुसाफिर ....

थलु: स्वामी टेऊँराम जग में वाह जा कई कमाई रे।
वाह जा कई कमाई, दर्वेश हो इलाही॥

1. पासो करे दुनिया खां, कामिल कई फकीरी।
आसूँ उम्मेदूँ त्यागे, आशिक छदी अमीरी।
महिलनि जी मौज त्यागे, वारी वञी वसाई रे॥

2. खबड़नि में वेही खावन्द, एकान्त में अकेलो।
दींहं राति थे कयाईं, महिबूब साणु मेलो।
झुगटनि में जानि पंहिंजी, जोगीअ हुई जलाई रे॥

3. भुलिजी भी कंहिंजे दिलि खे, दातर न हो दुखायो।
दिलि खोले दान दियण में, हिन घोट ना घटायो।
दानी बणी दिलावर, दौलत जहीं लुटाई रे॥

4. भगितीअ जो हो भण्डारो, परमात्मा जो प्यारो।
साहिबु सखा जो सांईं, धर्मात्मा उदारो।
परमानन्द तंहिंजी मुख सां, कहिड़ी करियां वदाई रे॥

भजन-83

तर्ज: बाबुल की दुआएं लेती जा .....

थलु: स्वामी टेऊँराम हो जोगी जती, गुणवान हुयो गुणवाननि में।
हुयो निहठो निमाणो निर्मोही, विद्वान हुयो विद्वाननि में॥

1. नंढपण खां हुयो संगु संतनि जो, उन संग में बण्यो हू वैरागी।
दुनिया जा सभु बंधन तोड़े, जंहिं आशा तृष्णा हुई त्यागी।
दींहं राति झुकायईं सिरु पंहिंजो, गुरुदेव जे चरननि कमलनि में॥

2. स्वामी आसूराम जी कृपा सां, संगति त सजीअ जो स्वामी बणियो।
छदे हर्ष शोक बणियो निर्मानी, सदा संत सचो निष्कामी बणियो।
दींह राति भजन ऐं भक्ती करे, बुधवान बणियो बुधवाननि में॥

3. गुण कहिड़ा लिखी मां कहिड़ा लिखां, साईं व्यास मुनीअ जी सूरत हो।
सभिनी सां हुयो मिठिड़ो बोलण, सचु प्रेम प्यार जी मूरत हो।
अहिड़ो **परमानन्द** ना थीन्दो बियो, हुयो नूर सचो नूराननि में॥

भजन-84

तर्ज: जहां डाल डाल पर सोने .....

थलु: स्वामी टेऊँराम करे व्यो भक्ती, नालो अमर बणाए,
व्यो जोगी जोगु कमाए॥

1. नण्ढपिण खां जंहिंजे मुख में हुयड़ी, राम नाम जी बाणी।
सत्संग में सभखे दीन्दा हुआ से, ज्ञान सन्दी समझाणी।
छदे काम क्रोध ऐं लोभ मोह खे, ममता वियो मिटाए॥

2. दर्वेश बणी रह्यो दुनिया में, सदा फूल कमल ज्यां न्यारो।
हुयो हरिश्चन्द्र जां दाता दानी, संतनि में सोभारो।
शुकदेव मुनीअ जां त्यागी बणी व्यो, जीवन सफल बणाए॥

3. व्यो हंस हल्यो हिन दुनिया मां कुछ, चूंडे मणिक जा मोती।
घर घर में तंहिंजे गुणनि सन्दी अजु, जगन्दी रहे थी जोती।
व्यो प्रेम जो प्यालो पियारे सभिनि खे, मौजी मस्त बणाए॥

4. अजु नगर नगर में तंहिं जोगीअ जी, आहे अमर कहाणी।
सत्संग में सन्त उचारिनि था इहा, अमरापुर जी वाणी।
परमानन्द तंहिंजे दर ते हरदम, पंहिंजो सीसु झुकाए॥

भजन-85

तर्जः हाए शर्माऊँ किस किस को बताऊँ .....

थलुः जोगु जुगिती मिले, मोक्ष मुक्ती मिले, भाव भगिती मिले सभखे,
मिलनि थ्यूं साखियूँ सुहाणियूं।
हिन सन्त जे दर जूं, दर्वेश जे दर जूं, इहे थव टेई निशानियूं॥

1. आहे स्वामी टेऊँराम , जीअं वृन्दावन में श्याम,
आयो अयोध्या में जणु राम, कया पूरण सभ जा काम, तमाम।
दिल जो दानी, गोहर ज्ञानी, रमजूं रुहानियूं, जोगु ......

2. आहे स्वामी सर्वानन्द, दिए सभनी खे आनन्द,
करे साईं थो सत्संग, चढ़े मन में अहिड़ो रंग, उमंग।
दिए समझाणी, सुखनि जी खाणी, लात्यूं लासानियूं, जोगु ......

3. आहे अमरापुर दरबारि, कयो जंहिं जंहिं भी दीदार,
तंहिंजा बेड़ा थियड़ा पारि, कयो **परमानन्द** विस्तार, पुकार ।
जंहिं भजन बणायो, गाए बुधायो, लिखियूँ कहाणियूँ, जोगु ......

भजन-86

तर्जः मेरा प्यार भी तू है ......

थलुः दुःख दूर कजांइ, ग़म चूर कजांइ,
मूंखे कंहिंजी दिजांइ न मोथाजी, स्वामी टेऊँराम॥

1. अमरापुर जा संत सचारा, अमर लोक खां आएं तूं।
धणीअ मुको हो धुरियऊँ तोखे, नाम जपाइण आएं तूं।
सन्त सचा सुखधाम ॥

2. जोगी तुंहिंजे मुंहं में मण्या हुई, वचन तुंहिंजो ना खाली व्यो।
दर तुंहिंजे तां दाता कद्हीं, स्वाली सजण ना खाली व्यो।
भगिती कयइ निष्काम॥

3. गुरु नानक जां घर घर में तो, प्रेम सन्दो प्रचार कयो।
प्रेम प्रकाशी पंथ बणाए, प्रेमिनि ते उपकार कयो।
दिनुइ मन्तर साखी सत्नाम॥

4. **परमानन्द** जो अर्जु इहो थई, देहीअ जा दुःख दूर कजांइ।
मंगतो बणिजी मिन्थ कई थमि, मालिक सा मंजूर कजांइ।
गोलो अहियां मां गुलाम॥

भजन-87

तर्जः मां स्वाली तो दर आहियां ....

थलुः थी जोगी जोगु कमायां, ओ माता कृष्णा ओ,
मूंखे महिर करे दे मोकल ...

1. मुंहिंजो जोगी जीउ झटे व्या, ऐं फ़िराक में दिलि त फटे व्या।
सभु संसा शोक कटे व्या, मां तिनि जा पंध पुछायां॥

2. तूं स्मरण करि घर वेही, करि कारि दुनिया जी सभेई।
इएं सफली थींदइ देही, मां भलो तुंहिंजो थी भांयां॥

3. बीठो काल कुल्हनि ते आहे, सभु कम थो अध में डाहे।
हिति रहिणो दींह ब आहे, पोइ कंहिं लाइ कूड़ कमायां॥

4. दिनी माता मोकल रोई, चयो कजि तूं कमु उहोई।
जंहिं में जसु गाए सभु कोई, इहो **सीतल** साफु सुणायां॥

भजन-88

तर्जः भाग वरन्दो आ ......

थलुः कीअं विहन्दो हुएं, कीअं सुहन्दो हुएं, सत्गुरु टेऊँराम तूं।

1. बधी सन्दिरो चेल्हि में, कीअं हलन्दो हुएं।
कीअं चलन्दो हुएं, सत्गुरु टेऊँराम तूं॥

2. जोगियुनु वारे वेस में, कीअं मिलन्दो हुएं।
कीअं खिलन्दो हुएं, सत्गुरु टेऊँराम तूं॥

3. अंगल आरा शिष्यनि जा, कीअं सहन्दो हुएं।
चुप रहन्दो हुएं, सत्गुरु टेऊँराम तूं॥

4. आश्काणे आवाज़ सां, कीअं गाईन्दो हुएं।
दिल घाईंदो हुएं, सत्गुरु टेऊँराम तूं॥

5. **सीतल** खे सिक सां सदा, कीअं भाईन्दो हुएं।
कीअं चाहीन्दो हुएं, सत्गुरु टेऊँराम तूं॥

34

भजन-89

तर्जः पिंजरे के पंछी रे ....

थलुः हुयो स्वामी टेऊँराम, जंहिं जपियो भगवत नाम।
निर्वेरी हो निहठो निमाणो, सम दर्शी निष्काम॥

1. शहर खण्डूअ में जनम वरिताईं, कृष्णा जी अची गोदि भरियाईं रे।
समझ में सभ खे आयो ईएं थे, हो जणु जमन्दे जामु॥
2. नंढपिण खां गुरु ज्ञान खे पाए, अनभइ जी वियो जोति जगाए रे।
गुरु कृपा सां पातो जंहिं हो, सर्व सुखनि जो धाम॥
3. टण्डे में जंहिं वारी वसाई, अमरापुर दरबारि बणाई रे।
सत्संग जी रिमझिम व्यो लगाए, सजणु सुबह ऐं शाम॥
4. प्रेम प्रकाशी पंथु बणाए, झण्डे खे चौधारी झुलाए रे ।
पाण पीतो प्रेमिनि खे पियारियो, प्रेम संदो जंहिं जाम॥
5. सिन्ध ऐं हिन्द जो सैर कयाईं, प्रेम जो रस्तो सभ खे दसियाईं रे।
शास्त्री जंहिं खे सिक श्रद्धा सां, पलि पलि करे प्रणाम॥

भजन-90

तर्जः ऊँची ऊँची दुनिया की दीवारें सैयां तोड़के ...

टेकः सिन्ध देश में इक था योगी, सत्गुरु टेऊँराम जी,
जग में अमर है उनका अभी तक नाम जी।

1. अवतार आए, दातार आए, अरु भक्ती के भण्डार आए।
कृष्णा की गोदी में, मानो कर्तार आए।
जन्म भूमी उनकी खण्डू गाम जी॥
2. वैराग लिया, सब छोड़ दिया, संसार का जिसने त्याग किया।
सत्गुरु की सेवा करके, ऊँचा सौभाग्य किया।
मिला गुरु पूरन आसूराम जी॥
3. धुनी लगाकर नाम जपाकर, अमरापुर स्थान जमाकर।
प्रेम प्रकाशी मण्डल, अपना ही ग्रंथ बनाकर।
साक्षी जपाया सत्नाम जी॥
4. जहां से आए, वहां समाए, बैठे आत्म धाम बसाए।
चन्दू कहे मैं उनको, श्रद्धा से सीस निवाए।
करता हूं नित प्रणाम जी॥

भजन-91

तर्जः जिंदगी की न टूटे लड़ी .....

थलुः तुंहिंजी कृपा जी घुरिजे कणी, महिर कर मूंते डिबु जा धणी।

1. जंहिंते कृपा थिए तुंहिंजी साईं, तंहिंते कृपा करे जही सारो,
चाहे बेड़ी हुजे सीर विच में, त बि सौलो उन्हीअ खे किनारो,
तुंहिंजी महिर जी महिमा घणी .....
2. जंहिंखे कोई न पंहिंजो बणाए, तंहिंखे मालिक तूं पंहिंजो बणाईं,
तूं निमाणनि सन्दो माणु दाता, जो शरणि आयो तंहिंखे बचाईं,
इहा गाल्ह सची मूं गणी....
3. तरसु पवन्दो तोखे मुंहिंजा प्यारा, मूं वर्ती ओट मालिक आ तुंहिंजी,
आयो **हेमन** आ तुंहिंजे शरण में, लज रखन्दें अची पाण मुंहिंजी,
आहीं तूं ही सुखनि जी मणी ....

भजन-92

तर्जः ये पड़दा हटादो, जरा मुखड़ा दिखादो .....

टेकः स्वामी टेऊँराम सुजानी, थे ज्ञानी ध्यानी दानी।
वो सब में राम को देख रहा, कोई और नहीं॥

1. स्वामी आसूराम सभा से जाना चाहते बाहर।
कहने लगे कोई सेवक हो मेरा जूता करे यहां हाज़िर।
वो आप थे अमानी, जूते पहनाए जानी॥
2. चोर पकड़ कर सामने लाए, उसको भी छुड़वाया।
हलवा पूरी खूब खिलाया, वस्त्र भी पहिराया।
की ऊपर महिरबानी, बोले मुख से मधुरी बानी॥
3. दूर से प्रेमी दर्शन खातिर, अमरापुर में आए।
दो बजे थे दिन के सोये, संत सभी सुख पाए।
की आप ही महिमानी, दीया टुकड़ा पिलाया पानी॥
4. ऐसे संत जी लोगों का, कल्याण सदा हैं करते।
लाला नारायण शरण आए की, झोली सदा हैं भरते।
है याद ये अमर कहानी, ये बात सभी ने मानी॥

35

भजन-93

तर्ज: ऐ मेरे वतन के लोगो .....

टेक: स्वामी टेऊँराम जी प्यारा, था इस दुनिया से न्यारा।
शुद्ध ब्रह्म स्वरूप ज्ञानी, था हरदम बाग़ बहारा॥

1. दु:ख सुख में धीरज धरता, कभी प्रेम प्रकाश न घटता।
था बुरे भले का साक्षी, नित राम रमैया रटता।
भले चोर मिले या साधू, था सब को देता सहारा॥

2. जल रही थी सब कुटियाएं, तो भी किसको दी न दुहाई।
गम खाकर हसते रहते, कहते थे राम रजाई।
हो इक मन इक मस्ती में, गाया गुन लेकर इकतारा॥

3. बनी अमरापुर आनन्द की, तो भी आप कुटिया में रहते।
व्यवहार अहार अल्प था, कभी बड़ा न आपको कहते।
वह सबसे पहले उठकर, था सबका करता सुधारा॥

4. स्वामी टेऊँराम अमर है, हुई अमर चरित्र कहानी।
है अमरापुर भी अमर ये, और अमरापुर की निशानी।
स्वामी सर्वानन्द भी अमर है, **लाला नारायण** ने पुकारा॥

भजन-94

तर्ज: आजा मेरी बर्बाद मोहब्बत ....

थलु: वारी ओ वारी, वारी वसाई टण्डे में मुहिंजे सत्गुरु टेऊँराम।
वैरागी बणिजी जोगु कमायो, जुहिदनि सां हो जाम॥

1. जंहिं झंगल में मंगल बणायो, वारीअ जे डिबुनि ते।
कैलाश पर्बत अमरापुर हो, जोगिनि जो सो धाम॥

2. जिते बाग़ चमन चौधारी, गंगा जीअं खूहु वहे प्यो।
ऐं झण्डो आलीशान आहे, मन्दरु भी अभिराम॥

3. जिति संगति ख़ूब अचे थी, सत्संग जी थिए बहारी।
डींह राति हले थो भोजनु, खाए ख़लकत पेई आम॥

4. लगे चोट जे बारहींअ मेलो, अचनि रागी सन्त ज्ञानी।
चवे **नानक** प्रेम प्रकाशी, मण्डिलियूं सिन्ध जूं अचनि तमाम॥

भजन-95

तर्ज: गंगा मैया जब तक ये पानी रहे .....

थलु: जेसीं गंगा ऐं जमुना में पाणी रहे।
स्वामी टेऊँराम तुंहिंजी कहाणी रहे॥

1. कींअ जोगी तो जोग कमायो,
वाह वारीअ ते मन्दर बणायो।
झंडो तुंहिंजो झूले, इहा बोली बोले,
वाह शेरल तुंहिंजी हीअ शहाणी रहे॥

2. खिली खावन्द तो सभखे खारायो,
जाती पातीअ जो भेद मिटायो।
जपाए साखी सत्नाम, पियारे वचननि जो जामु।
तुंहिंजी अमर हीअ ग्रन्थ वाणी रहे॥

3. जेसीं चण्ड ऐं सूरज जो नजारो,
दास **नोतन** गाए मुल्क सारो।
दियो नाम जो दान, धरियां तुंहिंजो मां ध्यान,
तुंहिंजे चरणनि में वृती समाणी रहे॥

भजन-96

तर्ज: ये मेरा दीवानापन है .....

थलु: अमरु गीत बुधायां थो मां, स्वामी टेऊँराम जो,
स्वामी टेऊँराम जो, सन्त सचे गुणधाम जो।

1. शहर खण्डूअ में हुई स्वामीअ, पवित्र पंहिंजी देहि धरी।
नर नारियुनि खुशियूं मनायूं, दिसी सभ जी दिल ठरी॥

2. प्रेम प्रकाशी मण्डल बणाए, हिन्द सिन्ध में प्रचार कयो।
ज्ञान जो उपदेश देई, सभिनि जो सत्कार कयो॥

3. अमरापुर स्थान बणाए, अमर पद्वी पाए व्यो।
सच जी राह सुणाए **नारायण**, सच जी ज्योति जगाए व्यो॥

भजन-97

तर्ज: होठो से छूलो तुम .....

थलु: करि महिर अची सभते, स्वामी टेऊँराम प्यारा।
हींअ मिन्थ मञीदें तूं, कामिल करणीअ वारा॥

1. मुखे नाजु आहे तोते, नंगी नंगु निभाइन्दे।
दे‌ई हथिडा हिम्मत जा तूं, भव सागर तारीन्दे।
तो सार लधी सभ जी, आलम जा आधारा॥

2. तूं वैरागी जोगी, तुंहिंजो जोग निरालो हो।
तुंहिंजे मुंहं में दिठम मिठिड़ा, भगितीअ जो उजालो हो।
इहो अर्जु अथई मुंहिंजो, करि बाझ का बाझारा॥

3. चवे दास **चुन्नी** तो दर, केई आशूं पुजाए विया।
हुयो भागु फिटल जिनिजो, ऊहे भागु बणाए विया।
रहन्दो नालो अमर तुंहिंजो, हिन्द सिन्ध जा सूंहारा॥

भजन-98

तर्ज: करती हूं तुम्हारा व्रत मैं .....

थलु: करि पार तूं बेड़ो मुंहिंजो, मुंखे तुंहिंजो आ आधार।
ओ स्वामी टेऊँराम तुहिंजे, नाले तां बलिहार।
ओ सद्गुरु प्यारा, मुंहिंजे जींअ जा जियारा॥

1. दर सभेई छदे दुनिया जा, मूं ओट वती तुंहिंजी।
करि साइथ सणाईं सत्गुरु, ठाहिजि किस्मत तूं मुंहिंजी।
को दींहुं दुखियो न देखारिज, अची लहिजइं सेघु संभार॥

2. करे माफ तूं मुंहिंजूं मदायूं, हथु महिर संदो धरिजांइ।
जे दोह कया थमि दातर, से खोले ना दिसजाई।
दई लज ऐ पत जो पड़दो, मुखे बख्शिजि बख्शणहार॥

3. छा हालु मां खोले बुधायां, आहीं मन जो तूं महिरम।
दरि **किशन** छदींदुसि कीन की जेसी दम में आहे दम।
दरु खोलि दया जो दातर, तुंहिंजो भरियलु आहे भण्ड़ार॥

भजन-99

तर्ज: हर कर्म अपना करेंगे ....

थलु: मूं वतो आधार आहे, स्वामी टेऊँराम जो।
सारी दुनिया जस थी गाए, स्वामी टेऊँराम जो।

1. जाप तो सतगुरु जपायो, सभखे हो सत्नाम जो।
अजु सजी दुनिया करे थी, जाप तुंहिंजे नाम जो।
जग में जै जैकार आहे, स्वामी टेऊँराम जो॥

2. वाणीं तुंहिंजी आहे निर्मल, प्रेम सा जेको पढ़े।
सवली तंहिंजी थिए सदाई, पार सो पल में तरे।
अणमयो उपकार आहे, स्वामी टेऊँराम जो॥

3. **श्याम** ते करि महिर मालिक, आहे तुंहिंजो आसरो।
तंहिंखे परवाह नाहे कंहिंजी, जंहिंखे तो पंहिंजो कयो।
केरु सघन्दो पार पाए, स्वामी टेऊँराम जो॥

भजन-100

तर्ज: हर कर्म अपना करेंगे ....

थलु: मुंहिंजो सत्गुरु तूं, मुहिंजो रहबर तूं।
मुंहिंजे दिल जो आहीं दिलबर तूं।
अचो खुशीअ मां गीत गायूं, स्वामी टेऊँराम जो।
अजु जन्म दींहुं था मनायूं, स्वामी टेऊँराम जो॥

1. घर वसियो चेलाराम जो, आयूं वाधायूँ वरी।
माता कृष्णा भी थी गद्गद् गोद हुई उनजी भरी।
सभ करे दीदार खुश थिया, स्वामी टेऊँराम जो॥

2. कौशल्या जींअ राम खे, मां यशोदा श्याम खे।
माता कृष्णा इएं दिनी हुई, लोली टेऊँराम खे।
पाण बि तींअ झूलो झुलायूं, स्वामी टेऊँराम जो॥

3. जगत जे कल्याण खातिर, आये हिन दातार खे।
वीरभान सव साल थी विया, जाए हिन मनठार खे।
मौज सां मेलो लगायूं, स्वामी टेऊँराम जो॥

भजन-101

तर्ज: इक दुखियारी कहे ......

थलु: सत्नाम साखी जपे, सभखे वियो नाम जपाए।
सत्गुरु टेऊँराम करे भक्ती वियो,
दोखियुनि जा दर्द पियो मिटाए॥

1. बचपन खां वेरागी बणिजी, लालण सां लिव लाती।
नंढे वदे ऐं बार बुढे में, राम जी सूरत जाती।
हुयो संत सचो त्यागी, हुयो परम वैरागी।
हुयो रागिनि में रागी, श्री राम अनुरागी।
थी निष्कामी वियो प्रेम जी जोत जगाए॥

2. सन्तनि जी सेवा में जहिं हो, जीवन सफल बणायो।
सतगुरु जी आसीसा सां जंहिं, नालो अमर बणायो।
वाह जी टुकड़ी हलाई, जंहिं में मस्ती इलाही।
अची तूं बि दिसु खाई, थींदइ सतगुरु सहाई।
पर उपकारी बणी ज्ञान जी गंगा वहाए॥

3. श्रद्धा सां जो सीस झुकाए, नारायण पलव झले थो।
शंकर तुंहिंजूं पुजनि मुरादूं, बिगड़यलु भाग खुले थो।
हिते जो भी आयो स्वाली, बणियो सोई भागशाली।
दरबारि तुंहिंजी आली, दिठी शक्ती निराली।
भोले भण्डारीअ वांगुर, झटपट आशूं पुजाए॥

भजन-102

तर्ज: बहुत प्यार करते है .....

थलु: किसे राम प्यारा, किसे प्यारा श्याम।
हमें तो प्यारा लागे, बाबा टेऊँराम॥

1. माता कृष्णा का, है जो दुलारा।
बाबा चेलाराम का, है जो प्यारा।
बारम्बार उनको मेरा प्रणाम॥

2. किसे सोमवार का दिन है प्यारा।
किसे मंगल और किसे शुक्रवारा।
हमें शनिवार ने, दिया सुखधाम॥

3. किसे एकादशी तिथि, लगे है प्यारी।
कोई सत्यनारायण, का वृतधारी।
हमें लगे चौथ ही, सुन्दर श्याम॥

4. किसे कार्तिक का, महीना प्यारा।
माघ महीने का कोई पुजारा।
हमें तो आषाढ़ और चैत्र से काम॥

5. किसे प्यारा वैकुण्ठ, किसे स्वर्ग प्यारा।
किसे कैलाश लगे है दुलारा।
हमें तो प्यारा लागे, अमरापुर धाम॥

6. किसे प्यारा लागे, वृन्दावन निज़ारा।
किसे अयोध्या किसे काशी प्यारा।
हमें तो प्यारा लागे, खण्डू गाम॥

7. किसे हरिओम किसे कृष्ण प्यारा।
किसे सियाराम किसे जय शिव प्यारा।
हमें तो प्यारा लागे, साक्षी सत्नाम॥

8. गुरु में बसे सारे देवी देवा।
ताते करो सब गुरु की सेवा।
गुरु सेवा करे, पूरन काम॥

भजन-103

तर्ज: छोटी छोटी गैया छोटे छोटे ग्वाल...

थलु: धनु धनु मुंहिंजा सांईं टेऊँराम,
दुनियां सारी करे तोखे प्रणाम॥

1. धनु माता कृष्णा धनु चेलाराम,
धनु धनु तव्हांजो खंडू आहे गाम॥

2. धनु तव्हांजी वाणी धनु तव्हाजो नाम,
धनु धनु तव्हांजा सन्त सुजान॥

3. प्यारो तव्हांजो सत्संगु प्यारो दीबानु,
मन खे प्यारो लगे, साखी सत्नाम॥

4. तुहीं मुंहिंजो कृष्ण तुहीं मुंहिंजो राम,
प्रेमी धरे दिसु मन में ध्यान॥

5. सुहिणो तव्हांजो दर्शन, सुहिजो आहे धामु।
तन मन खे जिते मिलन्दो आरामु॥

6. करे सेवा जेको, जपीन्दो नामु।
गुरु करे तंहिंजा, पूर्ण काम॥

7. अमरापुर तुंहिंजो, अमरु आ धामु।
देव ऋषि मुनि, कनि प्रणाम॥

8. जादे दिसां तादे मुंहिंजो, सांईं टेऊँराम।
घर-घर में जंहिंजो, शाही आ शानु॥

▪▪▪▪▪▪▪▪▪▪▪▪▪▪▪▪

भजन-104

तर्ज: झूमता मौसम मस्त ......

थलु: स्वामी टेऊँराम ज्ञानी, मोहिनी मूरत हो निर्मानी।
दिल जो दाता बेशक दानी, वाह जो हुयड़ो सन्त सचो॥

1. जोगीअ जोग कमायो हो, वारीअ खे त वसायो हो।
मोहन वारी मुरली वजाए, साध संगत खे मस्त बणाए।
नाम जपे वियो बियनि खे जपाए, वाह जो हुयड़ो॥

2. निर्मोही निष्कामी हो, अमरापुर जो स्वामी हो।
प्रेम प्रकाशी पंथ बणायो, प्रेम सन्दो उपदेश सुणायो।
सत्नाम साखी जाप जपायो, वाह जो हुयड़ो॥

3. सन्त सचो हो सैलानी, लाल बणियो हो लासानी।
वासदेव वियो रंग रचाए, मेलो बारहींअ चेट लगाए।
साध संगत जी मौज मचाए, वाह जो हुयड़ो॥

भजन-105

तर्ज: सत्गुरु टेऊँराम तेरी मैने देखी महान शक्ती ......

टेक: सत्गुरु टेऊँराम तेरी अजब अजायब थी जिन्दगानी

1. बचपन से ही राम भजन में, वृति तेरी लागी।
मात पिता गुरु सेवा कीनी, पाया आत्म ज्ञान रूहानी॥

2. शेरों जैसी की निर्भयता, किससे नाहिं डरते।
किसको तूने नाहिं डराया, थे तुम पूरण निर्भय दानी॥

3. विषय भोग की आस त्यागे, होया तुम वैरागी।
ले इकतारा नाम जपाया, सैर किया बनकर सैलानी॥

4. सहन शक्ति का पाठ पढ़ाया, सहा मान अपमाना।
सब अवस्था में सम हो रहिया, ईश्वर की सब लीला जानी॥

5. सर्वानन्द क्या गुन गाऊं, महिमा अपरम्पारा।
जब तक सूरज चान्द रहेगा, याद रहेगी तेरी कहानी॥

39

भजन-106

तर्जः मेरा जीवन कोरा कागज...

थलुः स्वामी टेऊँराम तेरी महिमा अपरम्पार।
जो भी आए शरण में, वो भव से होता पार॥

1. हम हैं बालक तेरे स्वामी, तुम हो पालन हार।
फंस गई है मेरी किश्ती, बीच भंवर मझधार।
प्रार्थना सुन इस जीवन की, नैया पार उतार॥

2. हम हैं पापी तुम हो पावन, पाप करो सब दूर।
हम हैं अवगुण से भरे, तुम गुणन से भरपूर।
दूर सब अवगुण करो, भर ज्ञान गुण भण्डार॥

3. कितने तारे गिनती नाहीं, गुरु गरीब निवाज़।
मैं भी आया शरण तेरी, राखो मेरी लाज़।
मुझको तेरा आसरा है, तारो तारण हार॥

भजन-107

तर्जः जिस दिल में बसा था प्यार तेरा ......

टेकः मेरे सत्गुरु टेऊँराम साहब, चरणों में अपनी जगह देना।

1. तू संत सच्चा उपकारी है, तेरी महिमा सबसे न्यारी है।
हम तेरे दर के पुजारी हैं, इक बार गले से लगा देना॥

2. नैनों में छबी तेरी बस जाए, जहां डालूं नजर बस तू आए।
बिन तेरे अब न रहा जाए, मुझे अपना दास बना देना॥

3. तुम बिन दिल को न करारी है, ये जान भी तुझ पे वारी है।
तेरी सूरत लगती प्यारी है, इकबार तो दरस दिखा देना॥

4. पतझड़ जीवन कोई गुल न खिला, वह जीना क्या जब तू न मिला।
मर जाएंगे अब तेरे बिना, हरि और न देर लगा देना॥

भजन-108

तर्जः मन मोहन गिरधारी...

थलुः स्वामी टेऊँराम दातार, बड़े थे दीनदयालू॥

1. पर उपकारी धीरजधारी, बह्मनेष्ठी बह्मविचारी।
ईश्वर के अवतार॥

2. खण्डू गांव में प्रभू आए, मां कृष्णा ने सब सुख पाए।
सबके थे आधार॥

3. बचपन में हरि भक्ती कीनी, प्रभु चिंतन में वृत्ती भीनी।
सबको दीना प्यार॥

4. जंगल में जा डेरा लाए, अपने तन को बहुत तपाए।
छोड़ा सुख संसार॥

5. अमरापुर स्थान बनाया, सत् मार्ग में सबको लगाया।
कीया प्रेम प्रचार॥

6. सब जीवों को आनंद दीना, चारों दिश सर्वानन्द कीना।
जाऊँ बलि बलिहार॥

**सत्गुरु टेऊँराम की,
महिमा सकूं न गाय।
कठिन समय में होत है,
सर्वानन्द सहाय।।**

पावन श्री अमरापुर धाम की महिमा का भजन

तर्जः आ चल कि तुझे, मैं लेके चलूं ......

टेकः ऐ मन चल तू, अमरापुर में, गुरु का दीदार मिले।
जहां गम भी नहीं, चिन्ता भी नहीं, बस सच्चा प्यार मिले॥

1. है पावन गुरु की भूमी, मन को जहां शान्ती मिलती।
दुःख का जहां नाम नहीं है, जहां प्रेम की गंगा बहती।
श्रद्धा से झुका, मस्तक अपना, सुख का भण्डार मिले॥

2. सत्‌गुरु टेऊँराम साहब का, जहां कण कण में है वासा।
विश्वास है जिसके मन में, हो पूरी उसकी आसा।
यह लोक बने, परलोक बने, मुक्ति का द्वार मिले॥

3. यहां सत्‌गुरु सर्वानन्द ने, की बैठ तपस्या भारी।
गुरुभक्त न ऐसा होगा, जिसने सब संगत तारी।
धर ध्यान गुरु के, चरणों का, तुझे सत्करतार मिले॥

4. गुरु शान्तिप्रकाश ने हरदम, अमरापुर महिमा गाई।
तीनों लोकों से न्यारी, है भूमी यह सुखदाई।
धूली को उठा, मस्तक से लगा, आनन्द अपार मिले॥

5. हरिदास राम गुरुदेव जी, यहां गुरु का नाम जपाते।
सत्कर्म नीति मर्यादा, हैं प्रेम का पाठ पढ़ाते।
दे ध्यान गुरू के, वचनों पर, तुझे शुभ वीचार मिलें॥

6. बनी शोभादायक सुन्दर, सत्‌गुरु की समाधी न्यारी।
दर्शन से मन हो शीतल, मिट जाती उलझन सारी।
वह भाग्यवान, गुरु चरणों का, जिसको आधार मिले॥

सोलह–शिक्षाएं

दोहाःसोलह शिक्षाएं सुनो, सुखदायक हैं जोय।
कह टेऊँ संकट कटे, देत परम गति सोय ।।

शैरः आदि फल वीचार के तुम, कर पीछे सब काम जी।
ये वचन मन माहिं धारे, पाय सुख आराम जी ।।

2. उद्यम कर शुभ कर्म कारण, सीख ये ही सार है।
भाग पर कछु नाहिं राखो, वेद ग्रन्थ पुकार है।।

3. समय का अति कदर करना, खोइये न कुसंग में।
जो बचे व्यवहार से, सो सफल कर सत्संग में।।

4. सर्व से तुम गुण उठाओ, दोष दृष्टी को हरे।
देख अवगुण आपना, जो बहुत हैं मन में भरे ।।

5. सर्व जीवों से करो हित, निन्द किसकी ना करो।
ना बुरा चाहो किसी का, भाव शुद्ध हृदय धरो ।।

6. जीव किसको ना दुखाओ, दया सब पर कीजिये।
राम व्यापक जान सबमें, द्वेष को हर लीजिये ।।

7. समय जोई गुजर जावे, याद ना तुम ताहिं कर।
आने वाले वक्त की भी, चिन्ता मन में नाहिं कर।।

8. जो बनावे ईश्वर तुम, ताहिं पर राजी रहो।
जा बनी सा है भली सब, यों सदा मुख से कहो।।

9. आपने स्वार्थ लिये तुम, झूठ ना कब बोलना।
वचन साचा मधुर हो जब, तबहिं मुख को खोलना।।

10. शरण तेरी आय जोई, ताहिं दे सन्मान जी ।
यद्यपि वैरी होय तो भी, ना करो अपमान जी।।

11. और का उपकार कर तुम, छोड़ स्वार्थ आपना।
लोक पुनि परलोक में कब, होय तुमको ताप ना।।

12. धर्म अपने माहिं हरदम, प्यार कर नटना नहीं।
सीस जावे जान दे पर, धर्म से हटना नहीं।।

13. मौत अपना याद कर ले, तिंह भुलावो ना कभी।
जान मन में मरण का दिन, निकट आया है अभी।।

14. धर्मशाला जान जग को, जीव सब महिमान है।
मोह किससे ना करो, सब स्वप्न सम सामान है।।

15. वेद गुरु के वचन पर नित, तुम करो विश्वास जी।
अटल श्रद्धा धार मन में, भ्रम कर सब नास जी ।।

16. आदि मंतर ले गुरू से, जाप जप धर ध्यान को।
जगत बंधन तोड़ विचरो, पाय आतम ज्ञान को।।

दोहाः ये शिक्षाऐं याद कर, मन में पुनि वीचार।
कह टेऊँ करनी करे, भव निधि उतरो पार।।

सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज कृत

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

शान्ति के दोहे

1. भक्त वत्सल भय हरन हरि, करुणा शील निधान।
कह टेऊँ कलि काल में, लाज राख भगवान।।

2. हे समर्थ सर्वज्ञ हरि, दीन बंधु दातार ।
कह टेऊँ कृपा करे, दे शुभ गुणन भण्डार ।।

3. मैं मांगत नहिं और कुछ, सन्त दरस हरि देह।
कह टेऊँ दर्शन करे, सफल करूं तन एह ।।

4. इन्द्रराज वैकुण्ठ सुख, नहिं मांगूं धन धाम।
कह टेऊँ मुझ दीजिये, हे हरि अपना नाम।।

5. जितने कण के रेत के, उतने अवगुण मोहि।
कह टेऊँ गुरु बख्श ले, शरण पड़ा हूं तोहि।।

6. सत्गुरु मुझको दान दे, प्रेम भक्ति विश्वास।
कह टेऊँ नित सुमति दे, सन्तन माहिं निवास।।

7. सत्गुरु तुम पूरण करो, मेरी यह अर्दास।
कह टेऊँ मन में कभी, रहे न जग की आस।।

8. सत्गुरु आत्मज्ञान दे, हरो देह अभिमान।
कह टेऊँ सब घट विषे, दिखलाओ भगवान ।।

9. रे मन राखो राम में, पूरण तुम विश्वास।
कह टेऊँ विश्वास से, होवे सब दुख नास।।

10. राम भरोसा राख तुम, और भरोसा त्याग।
कह टेऊँ हरि शरण ले, खोलो अपना भाग।।

11. चिन्ता भोजन वसन की, टेऊँ करते काहिं।
हरि विश्वम्भर दे सबहिं, क्या तुम देवहिं नाहिं।।

12. उदर भरण के कारने, भटकत काहिं अजान।
त्यागे चिन्ता पेट की, सुमरो श्री भगवान ।।

13. कह टेऊँ संसार में, बात यही है सार ।
भजन करो भगवान का, छोड़ो विषय विकार।।

14. कह टेऊँ हरि नाम जप, भूलो ना क्षण एक।
भोगत भोगत विषय रस, बीते जन्म अनेक।।

15. मात गर्भ में तुम किया, हरि से जो इकरार।
कह टेऊँ तिहं याद कर, सुमरो सत्कर्तार।।

16. मन बुद्धि इन्द्रिय प्राण धन, जिहं दीनी नर देह।
कह टेऊँ तिस राम का, नित सुमरण कर लेह।।

17. पूर्व पुण्य ते पाइया, मानुष का अवतार।
कह टेऊँ तिहं सफल कर, सुमरे सृजणहार।।

18. चौरासी लख योनि का, मानुष है सिरताज।
कह टेऊँ हरि भजन का, कर इस तन में काज।।

19. गफ्लत में न गंवाइये, मानुष देह महान।
कह टेऊँ तुम जाग के, भज ले श्री भगवान।।

20. कह टेऊँ तुम चेत ले, अब कुछ बिगड़ी नाहिं।
दया धर्म शुभ कर्म कर, हरि सुमरो मन माहिं।।

21. सोए अविद्या नींद में, कह टेऊँ बहु काल।
अब तो गफ्लत छोड़ के, सुमरो दीन दयाल।

22. हरि सुमरो तुम जाग के, सोय न निद्रा माहिं।
कह टेऊँ जागे बिना, हरि दर्शन दे नाहिं।।

23. अमृत वेले ऊठ के, छोड़ कल्पना काम ।
कह टेऊँ हरि ध्यान धर, सुमरो गुरु का नाम।।

24. प्रातःकाल जो ऊठ के, करत हरी गुण गान।
कह टेऊँ सो जगत में, होवत संत सुजान।।

25. निशदिन कर शुभ भावना, हरि को जान हजूर।
कह टेऊँ मन से करो, अशुभ भावना दूर।।

26. नीच ऊँच निर्धन धनी, सब में लख कर्तार ।
कह टेऊँ शुद्ध भाव से, सबका कर सत्कार ।।

27. बुरा भला जिन भाव ही, सबको सुख दुख देत।
कह टेऊँ दे और नहिं, फलत भाव का खेत।।

28. बुरा किसी का ना करो, सबका भला विचार।
टेऊँ बुराई जो करे, तांका कर उपकार।।

29. कल्प वृक्ष है आत्मा, कह टेऊँ सब माहिं।
जांकी जैसी भावना, तैसा फल दे ताहिं।।

30. मन पर साक्षी होय तुम, धर विवेक वैराग।
कह टेऊँ जे दोष हैं, तांका करो त्याग।।

31. थोड़े जीवन हेतु तुम, करो न पाप अजान।
कह टेऊँ मन जीत कर, पुण्य करो प्रधान ।।

32. निश्चल मन से मिलत है, निश्चल आत्म राम।
टेऊँ मन निश्चल करे, पाओ सुख का धाम।।

33. इष्ट देव भगवान की, करे उपासन जोय।
कह टेऊँ तिस मनुष्य का, निश्चल शुद्ध मन होय।।

34. कर्म धर्म जप ध्यान तप, योग यज्ञ व्रत दान।
कह टेऊँ हरि हेत कर, छोड़ ममत अभिमान।।

35. जप तप सेवा कर्म शुभ, तीरथ दान स्नान।
श्रद्धा बिन फल देत नहिं, कह टेऊँ सत् मान।।

36. प्रेम बिन पहुँचे नहीं, को जन हरि के धाम।
कह टेऊँ तांते जपो, प्रेम सहित हरि नाम।।

37. प्रेम भाव से होत वश, भक्त वत्सल भगवान।
कह टेऊँ तांते करो, हरि से प्रेम प्रधान।।

38. जिन–जिन हरि के प्रेम में, दीना तन मन प्रान।
टेऊँ तिन के कदम पर, झुक–झुक पड़त जहान।।

39. बेमुख हो कर्तार से, करत जगत से प्यार।
कह टेऊँ तिस मनुष का, कबहुँ न होत उद्धार।।

40. संत गुरू परमात्मा, साचे संगी जान।
कह टेऊँ इन तीन से, करले प्रेम सुजान।।

41. हरि मेली हैं सन्त जन, हरि से देत मिलाय।
कह टेऊँ छोड़त नहीं, जो जन शरनी आय।।

42. जैसे जल में रहत है, अहनिश कमल अलेप।
कह टेऊँ तिमि जगत में, संत रहत निर्लेप।।

43. संत राम में भेद नहिं, संत राम स्वरूप ।
कह टेऊँ रट राम को, भये राम के रूप ।।

44. स्वार्थ बिन सेवा करे, सबको दे सन्मान।
टेऊँ समता में रहे, सोई संत पछान।।

45. जग में जीते जो मरे, तजे देह अभिमान।
कह टेऊँ संसार में, सो नर मुक्ता मान।।

46. जीवित जग में मरत जो, तां पर छत्र झुलंत।
टेऊँ जग तिहं पूजते, जान रूप भगवंत।।

47. क्षमा जांके मन बसे, तिस हरि अंतर नाहिं।
कह टेऊँ सुर नर सभी, दर्शन चाहत ताहिं।।

48. क्रोध त्याग क्षमा धरे, सो है पूजन योग।
कह टेऊँ तिहं दरस ते, मिट जावत सब रोग।।

49. कली काल में कठिन है, योग यज्ञ तप ध्यान।
साधु संग हरि नाम से, टेऊँ हो कल्यान।।

50. संत समागम सम नहीं, साधन को जग माहिं।
कह टेऊँ बिन हरि कृपा, सत्संग मिलता नाहिं।।

51. पार करत भव सिन्धु से, सत्संग परम जहाज।
कह टेऊँ तामें चढ़ो, छोड़ जगत की लाज।।

52. सत्संग से सत्गुरु मिले, सत्गुरु से निज ज्ञान।
कह टेऊँ निज ज्ञान से, मिलहैं पद निर्बान।।

53. सत्गुरु बुद्धि के नैन में, डारे अंजन ज्ञान।
कह टेऊँ तम भ्रम हर, दिखलावे भगवान।।

54. कह टेऊँ भगवान से, सत्गुरु अधिक पछान।
कर्मों का फल देत हरि, गुरु दे मुक्ति दान।।

55. गुरु बिन रंग न लागहीं, गुरु बिन ज्ञान न होय।
कह टेऊँ सत्गुरु बिना, मुक्ती न पावे कोय।।

56. पूरन सत्गुरु देव से, पूरन ले उपदेश।
कह टेऊँ तिहं सुमर के, पाओ पूरन देश।।

57. सर्व व्यापक जान हरि, सबकी करिये सेव।
कह टेऊँ सब पाप हर, देखो आत्म देव।।

58. ब्रह्म आत्मा एक है, सत्चित् आनन्द रूप।
कह टेऊँ ज्ञानी जिसे, जानत निज स्वरूप।।

59. साक्षी चेतन ब्रह्म का, सब घट में है वास।
कह टेऊँ शशि सूर्य में, तांका है प्रकाश ।।

60. साक्षी चेतन रम रहा, जल थल पुनि आकाश।
कह टेऊँ तिहं जान के, पाओ सुख अविनाश।।

ॐ

श्री सत्नाम साक्षी

सद्गुरु टेऊँरामाष्टकम्

1 निश्शोकमानं गतरागद्वेषं,
ज्ञानैकसूर्यं जगदेकवन्द्यम्।
अध्यात्मलीनं विनिवृत्तकामं,
श्री टेऊँराम शरणं प्रपद्ये॥

2 यदा हि देशे यवनं प्रकोपात्,
सिन्धोस्समीपे बत धर्म हानिम्।
जनाञ्च सर्वान् व्यथितान् विलक्ष्य,
श्री टेऊँरामेण धृतोऽवतारः॥

3 सुरक्ष्य धर्मं त्ववतीर्य भूमौ,
प्रजासु व्याप्तञ्च विधर्मी धर्मम्।
विनाशाय तं मण्डल मण्डितेन,
प्रकाशितः प्रेम प्रकाश मार्गः॥

4 अष्टांगयोगे च समाहिताय,
लोकोपकारे कृतनिश्चयाय।
तद् ब्रह्मतत्वे परिनिष्ठिताय,
श्री टेऊँरामाय नमः शिवाय॥

5 शिष्टैश्च सर्वै परिपूजिताय,
स्वर्गाधिपतयेऽपि निःस्पृहाय।
कामादि षड्वर्ग जिताय तस्मै,
श्री टेऊँरामाय नमः शिवाय॥

6 योगीन्द्र वृन्दैः परिसेविताय,
भक्तार्तिनाशे कृतनिश्चयाय।
सर्वात्म भावे परिनिष्ठिताय,
श्री टेऊँरामाय नमः शिवाय॥

7 पूर्णेन्दुशोभा परिपूरिताय,
शुद्धाय शान्ताय गतस्पृहाय।
भस्मीकृताशेष निबन्धनाय,
श्री टेऊँरामाय नमः शिवाय॥

8 भक्तेश्च मार्गस्य निदर्शकाय,
प्रेम प्रकाश मण्डलोद्भवाय।
आचार्य वर्याय वशेन्द्रियाय,
श्री टेऊँरामाय नमः शिवाय॥

॥ इति॥

सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज

आरती

ॐ जय गुरु टेऊँराम, स्वामी जय गुरु टेऊँराम।।
पर उपकारी जगत उद्धारी, तुम हो पूरन काम।। ॐ ।।

जब जब प्रेमिनि निज हित कारण, तुमको पूकारा ।। स्वामी।।
तब तब गुरु अवतार धरे तुम, सबको निस्तारा ।। ॐ ।।

प्रेम प्रकाशी मण्डलाचार्य, मंत्र साक्षी सत्‌नाम।। स्वामी।।
धर्म सनातन के प्रचारक, नीति निपुण अभिराम ।। ॐ ।।

देश विदेश में मण्डली लेकर, पावन दे उपदेश।। स्वामी।।
आत्म रूप लखाया सबको, हरिया ताप क्लेश।। ॐ ।।

पूरण अचल समाधी तेरी, सिद्ध आसन ब्राजे।। स्वामी।।
रूप मनोहर सुन्दर लोचन, देखत मन गाजे।। ॐ ।।

आत्म स्थित वचन के पूरे, योगी इन्द्रिय जती।। स्वामी।।
परम उदारी धीरज धारी, परम अगाध मती।। ॐ ।।

धन धन मात पिता कुल तेरा, धन तव साधु सुजान।। स्वामी।।
धन वह देश जहाँ तुम जन्मिया, धन तव शुभ स्थान।। ॐ ।।

सुर नर मुनि जन हरिजन गुनिजन, गावत गुन तुम्हरे।। स्वामी।।
अंत न पाइ सके नर कोई, महिमा अपर परे।। ॐ ।।

जो जन तुम्हरी आरति गावे, पावे सो मुक्ती।। स्वामी।।
साध संगति को हरदम दीजे, पूरण गुरु भक्ती।। ॐ ।।

सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज

आरती

ॐ जय गुरु सर्वानन्द, स्वामी जय गुरु सर्वानन्द।
धर्म कर्म का दे उपदेशा, काटे यम के फन्द ।। ॐ ।।

तुम हो दाता दीन दयालू, सबके हितकारी ।। स्वामी।।
शेष शारदा नित गुण गावे, महिमा अति भारी ।। ॐ ।।

तन पर चोला गेरू रंग का, सिर पे जटाधारी।। स्वामी।।
कर कमलों में लाठी सोहे, मोहे नर नारी ।। ॐ ।।

अपने गुरु के निज वचनों को, घर घर पहुंचाया।। स्वामी।।
भूले भटके दीन जनों को, सत् मार्ग लाया ।। ॐ ।।

अधम उद्धारन कष्ट निवारन, भक्तन भयहारी।। स्वामी।।
भव जल तारन पार उतारन, कारन देह धारी।। ॐ ।।

देश विदेश में भ्रमण करके, भक्ती फैलाई ।। स्वामी।।
सोऽहम् शब्द का मंत्र दे वह, ज्योती दिखलाई ।। ॐ ।।

अजर अमर और अज अविनाशी, घट घट के ज्ञाता।। स्वामी।।
कण कण में तुम सर्व व्यापक, पूरण गुरु दाता।। ॐ ।।

परम उदारी पर उपकारी, अमरापुर वासी।। स्वामी।।
शरण तुम्हारी जो जन आवे, पावे सुख रासी।। ॐ ।।

टेऊँराम के कृपा पात्र, तुम हो भक्ती भण्डार ।। स्वामी।।
गुरू भक्त बन गुरु भक्ती का, खूब किया प्रचार ।। ॐ ।।

पूरण गुरु की पूरी आरति, जो जो नर गावे ।। स्वामी।।
पाप ताप सन्ताप मिटाकर, पूरण पद पावे ।। ॐ ।।

सद्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज

आरती

ॐ जय गुरु शान्ति प्रकाश, स्वामी जय गुरु शान्ति प्रकाश।
प्रेम के सागर सत्गुरु मेरे, मन में करो निवास।। ॐ ।।

मात पिता थे धर्म के मूर्ति, उपजा पूत सपूत।। स्वामी।।
बचपन से ही मन में जागी, कृष्ण दर्श की प्यास ।। ॐ ।।

टेऊँराम के श्री चरणों में, जीवन सौंप दिया।। स्वामी।।
उनकी दया से परम पद पाया, अद्भुत किया विकास ।। ॐ ।।

वेद वाणी और गुरुवाणी का, पाया ज्ञान भण्डार।। स्वामी।।
प्रेम प्रकाश मण्डल में चमके, सूरज सम सुख रास।। ॐ ।।

देश विदेश में भ्रमण करके, सबको मोह लिया।। स्वामी।।
सत्नाम साक्षी मंत्र जपाकर, काटी यम की फास।। ॐ ।।

देश धर्म की रक्षा के हित, सब कुछ त्याग दिया।। स्वामी।।
दीन जनों की सेवा में ही, पाया परम हुलास।। ॐ ।।

एकादशी और गौ सेवा का, खूब किया प्रचार।। स्वामी।।
कण कण में श्री कृष्ण को देखा, किया भेद भ्रम नाश।। ॐ ।।

जो जो दरश करे सद्गुरु का, मन में रख विश्वास।। स्वामी।।
आशा उसकी पूरण होवे, कारज होवन रास।। ॐ ।।

पूर्ण श्रद्धा से जो प्रेमी, आरति यह गावे।। स्वामी।।
सुख सम्पति और सुमती पावे, अमरापुर हो वास।। ॐ ।।

सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज

आरती

ॐ जय गुरु हरिदासराम, स्वामी जय गुरु हरिदासराम।
सत्चित आनन्द ब्रह्म स्वरूपा, सर्व सुखों के धाम ।। ॐ ।।

अमरापुर से आये जोगी, लेकर सत् सन्देश ।। स्वामी।।
अमृतवाणी सब सुख खाणी, अमर किया उपदेश।। ॐ ।।

बालापन से गुरु चरणों में, मनुवा तव लागा।। स्वामी।।
घर को त्यागा भया विरागा, सत्गुरु रंग पागा ।। ॐ ।।

सत्गुरु टेऊँराम साहब में, अटल रखा विश्वास।। स्वामी।।
सत्नाम साक्षी जाप जपाकर, प्रेम किया प्रकाश।। ॐ ।।

सद्गुरु सर्वानन्द की सेवा, तन मन से कीनी ।। स्वामी।।
पूरण गुरु की कृपा पाकर, सुरति शब्द भीनी ।। ॐ ।।

निर्मोही निर्मान नि:संगी, निर्भय निष्कामी।। स्वामी।।
निरइच्छा हो जग में विचरे, सत्गुरु सुख धामी ।। ॐ ।।

त्याग तपोमय जीवन धारे, सत्गुरु गुण गाया।। स्वामी।।
देश विदेशा सत् उपदेशा, सब को पहुँचाया ।। ॐ ।।

नभ में जल में पावक थल में, ज्योति तेरी जागे।। स्वामी।।
श्रद्धा से जो शरनी आवे, भय तांका भागे ।। ॐ ।।

प्रेम भाव हृदय में भरकर, आरति जो गावे।। स्वामी।।
सुमति प्रकाशे–सब दुख नाशे, मुक्ति पद पावे ।। ॐ ।।

छन्द

सर्व स्वरूपं आदि अनूपं, भूमि भूपं भयभाना।
अन्त न ऊपं छाय न धूपं, काढत कूपं धर ध्याना।
रहस्यारामं दायक धामं, नित निष्कामं निर्बानी।
पाद नमामं निशदिन शामं, श्री टेऊँराम गुरु ज्ञानी।
चावल चन्दन कुंगूं केसर, फूलों की वरखा बरसाओ।
नृसिंह गोमुख भेरी बाजा, तबला सुरन्दा झांझ बजाओ।
भर भर दीपक पूर्ण घी से, अगरबत्ती अरु धूप जलाओ।
आरति साज करो बहु सुन्दर, सद्गुरु की जयकार बुलाओ।

पल्लव

आशवंदी गुर तो दरि आई, तुम बिन ठौर न काई।
तूं हरि दाता तूं हरि माता, मेरी आश पुजाईं।
पाइ पल्लउ मैं पेर पियादी, आयसि हेत मंझाई।
तन मन धन अर्दास करे मैं, मांगत नामु सनेही।
नामु तुम्हारा साबुन करिसां, धोसां पाप सभेई।
कहे टेऊँ गुर लोक तीन में, आवागमन मिटाईं।

पल्लव

पलउ जे पाइन दाता तुंहिंजे दर ते।
दाता दर आयनि जा, अर्ज ओनाईं।
मिड़ई तिनि जे तन मन जा, दुखड़ा मिटाईं।
आसूं अघाईं, आसू आस वन्दनि जूं।
जो जन आ गुरु शरण में, बैठ करे अर्दास।
कहे टेऊँ तिस दास की, पूरण करिये आस।
दुख सर्व ही दूर हो, लगे न यम की त्रास।
कारज होवन रास, संशय कोई ना रहे।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल द्वारा प्रकाशित सत्साहित्य

हिन्दी

1.	श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ	301/–
2.	सद्गुरु टेऊँराम जीवन चरितामृत (प्रथम–द्वितीय भाग)	50/–
3.	सद्गुरु टेऊँराम जीवन चरितामृत (तृतीय–अन्तिम भाग)	75/–
4.	अमरापुर वाणी (भजन संग्रह)	30/–
5.	अमर कथा	10/–
6.	अमरापुर दर्शन	5/–
7.	यमराज नचिकेता (कविता)	5/–
8.	चूड़ाला शिखरध्वज (कविता)	5/–
9.	श्री प्रेम प्रकाश दोहावली	2/–
10.	प्रार्थना	10/–
11.	ब्रह्मदर्शनी (पद)	10/–
12.	स्वामी सर्वानन्द जीवन चरितामृत (प्रथम व द्वितीय भाग)	50/–
13.	साक्षी दर्शन	2/–
14.	स्वामी सर्वानन्द सन्देश	25/–
15.	सद्गुरु टेऊँराम चालीसा	1/–
16.	गुरु आराधना (सदगुरु टेऊँराम महिमा भजन)	15/–
17.	गुरु वन्दना (स्वामी सर्वानन्द महिमा भजन)	15/–
18.	वामन बली (कविता)	5/–
19.	कवितावली छन्दावली	2/–
20.	जन्म साखी (सद्गुरु टेऊँराम जी)	3/–
21.	नित्य नियम प्रार्थना	5/–
22.	स्वामी शान्ति प्रकाश जीवन चरित्र	30/–
23.	स्वामी गुरुमुखदास भजन माला	2/–
24.	स्वामी गुरुमुखदास दोहावली	2/–

सिन्धी

1.	श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ	151/–
2.	सद्गुरु टेऊँराम जीवन चरितामृत (प्रथम–द्वितीय भाग)	50/–
3.	सद्गुरु टेऊँराम जीवन चरितामृत (तृतीय–अन्तिम भाग)	50/–
4.	स्वामी सर्वानन्द जीवन चरितामृत (द्वितीय भाग)	10/–
5.	साक्षी दर्शन	2/–
6.	स्वामी शान्ति प्रकाश जीवन चरित्र	30/–
7.	अमरापुर वाणी (देवनागरी लिपि)	30/–
8.	स्वामी सर्वानन्द सन्देश	25/–
9.	स्वामी सर्वानन्द जीवन चरितामृत (प्रथम भाग)	25/–
10.	गुरु अराधना (सदगुरु टेऊँराम महिमा भजन)	10/–
11.	प्रार्थना	5/–
12.	नित्य नियम प्रार्थना	5/–

अंग्रेजी

1.	सद्गुरु टेऊँराम जीवन चरितामृत (प्रथम–द्वितीय भाग)	60/–
2.	प्रार्थना	5/–
3.	ब्रह्मदर्शनी	50/–
4.	स्वामी सर्वानन्द जीवन चरितामृत (प्रथम भाग)	5/–
5.	स्वामी सर्वानन्द जीवन चरितामृत (द्वितीय भाग)	50/–
6.	अमरापुर दर्शन	2/–
7.	गुरु अराधना (सदगुरु टेऊँराम महिमा भजन)	10/–
8.	स्वामी सर्वानन्द सन्देश	25/–
9.	नित्य नियम प्रार्थना	5/–

:: प्राप्ति स्थल ::

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

फोन: 0141–2372423, 2372424

स1भी प्रेम प्रकाश आश्रमों पर भी उपलब्ध है।